INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान
कम्प्यूटर अनुदेशक

(राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग (RSMSSB))

(हिंदी माध्यम)

भाग – 1

राजस्थान का सामान्य ज्ञान + शिक्षा शास्त्र

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक (हिंदी माध्यम)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**राजस्थान कंप्यूटर अनुदेशक भर्ती परीक्षा** " में पूर्ण संभव मदद करेंगें* **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Online Order करें - https://rb.gy/86fb4c

WhatsApp करें - https://wa.link/f64bo7

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

	राजस्थान का इतिहास	
क्र.सं.	अध्याय	पेज नंबर
1.	राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत	1
2.	प्रमुख प्रागैतिहासिक सभ्यताएं	17
3.	प्रमुख राजवंश एवं उनकी उपलब्धियां	24
4.	मुग़ल - राजपूत संबंध	74
5.	रियासतें, ब्रिटिश संधियाँ एवं 1857 का जन आन्दोलन	78
6.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	85
7.	प्रजामण्डल आंदोलन	94
8.	राजस्थान का एकीकरण	105
	कला संस्कृति	
1.	स्थापत्य कला की मुख्य विशेषताएँ	109
2.	राजस्थान के लोक देवी एंव लोक देवता	129
3.	मेले एवं त्यौहार	139
4.	राजस्थान के लोकसंगीत	150
5.	लोक नृत्य	157
6.	वेशभूषा एवं आभूषण	167

7.	चित्रकला	170
8.	हस्त कला	178
9.	महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक पर्यटन स्थल	187
	<u>राजस्थान का भूगोल</u>	
1.	स्थिति एवं विस्तार	194
2.	मुख्य भौतिक विभाग	209
3.	अपवाह तंत्र	219
4.	जलवायु	236
5.	मृदा	246
6.	प्राकृतिक वनस्पति, वन संपदा एवं वन्य जीव	250
7.	कृषि एवं प्रमुख फसलें	259
8.	राजस्थान में पशुपालन	266
9.	बहुउद्धेशीय परियोजनाएं	275
10.	राजस्थान में परिवहन	281
11.	खनिज सम्पदाएँ	291
12.	प्रमुख उद्योग	300

	शिक्षा शास्त्र	
1.	शिक्षा मनोविज्ञान का परिचय	303
2.	कक्षा में अध्यापकों की भूमिका	312
3.	बाल विकास / शिक्षार्थी का विकास	314
4.	अधिगम (सीखना)	334

अध्याय – 3

प्रमुख राजवंश एवं उनकी उपलब्धियां

गुर्जर प्रतिहार वंश

- गुर्जर प्रतिहारों ने लगभग 200 सालों तक अरब आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया ।
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से 11वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया ।
- जोधपुर के **बौक शिलालेख** के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवास मारवाड़ में लगभग 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था ।
- 8वीं-10वीं शताब्दी में उत्तर भारत में मंदिर व स्थापत्य निर्माण शैली **महाभारत शैली / गुर्जर-प्रतिहार शैली** प्रचलित थी ।
- अग्निकुल के राजपूतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहार वंश था, जो गुर्जरों की शाखा या गुर्जरात्रा प्रदेश से संबंधित होने के कारण इतिहास में **गुर्जर-प्रतिहार** के नाम से जाना गया ।
- गुर्जर प्रतिहारों का प्रभाव केन्द्र मारवाड़ था। गुर्जरात्रा प्रदेश में रहने के कारण प्रतिहार **गुर्जर प्रतिहार** कहलाए।
- गुर्जरात्रा प्रदेश की राजधानी **"भीनमाल (जालौर)"** थी । बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक ' हर्षचरित ' में गुर्जरों का वर्णन किया है ।
- इस वंश की प्राचीनता बादामी के चालुक्य नरेश पुल्केशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में 'गुर्जर जाति' के **सर्वप्रथम** उल्लेख से मिलती है ।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार-प्रतिहार शब्द का प्रयोग मण्डौर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को लक्ष्मण जी का वंशज मानते थे ।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत (ग्रंथ) सियूकी में **कु-ची-लो (गुर्जर)** देश का उल्लेख करता है ।
- जिसकी राजधानी **पि-लो-मो-लो** (भीनमाल) में थी । अरबी यात्रियों ने गुर्जरों को **'जुर्ज'** भी कहा है ।
- **अल मसूदी प्रतिहारों** को अल गुर्जर तथा प्रतिहार राजा को **'बोरा'** कहकर पुकारता है। भगवान लाल इन्द्जी ने गुर्जरों को 'गुजर' माना है, जो गुजरात में रहने के कारण गुर्जर कहलाए ।
- देवली, राधनपुर तथा करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है । डॉ. गौरीशंकर ओझा प्रतिहारों को क्षत्रिय मानते हैं । जॉर्ज केनेडी गुर्जर प्रतिहारों को **ईरानी मूल** के बताते हैं ।
- **मिस्टर जेक्सन** ने बम्बई गजेटियर में गुर्जरों को विदेशी माना है ।
- प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का संरक्षक था । **कनिंघम** ने गुर्जर प्रतिहारों को कुषाणवंशी कहा है ।
- डॉ. भंडारकर ने गुर्जर प्रतिहारों को खिज्रों की संतान बताकर विदेशी साबित किया है।
- स्मिथ स्टेनफोनो ने गुर्जर प्रतिहारों को हूणवंशी कहा है ।
- भोज गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था ।
- भोज द्वितीय प्रतिहार राजा के काल में प्रसिद्ध ग्वालियर प्रशस्ति की रचना की गई। **मुहणोत नैणसी** (मारवाड़ रा परगना री विगत) के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएं थी इनमें से दो प्रमुख थी - मण्डौर व भीनमाल
- गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी चामुंडा माता थी ।

भीनमाल शाखा (जालौर)

गुर्जर प्रतिहार वंश

गुर्जर प्रतिहार वंश – प्रतिहार शब्द वास्तव में पदनाम है जिसका अर्थ द्वारपाल है। अभिलेखिक रूप से गुर्जर जाति का उल्लेख सर्वप्रथम चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख में हुआ है।

- उत्तर-पश्चिम भारत में गुर्जर प्रतिहार वंश का शासन छठी से बारहवीं शताब्दी तक रहा।
- इतिहासकार रमेशचन्द्र मजूमदार ने गुर्जर प्रतिहार को छठी से बारहवीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का काम करने वाला बताया है।
- गुर्जरात्रा (गुर्जर प्रदेश) के स्वामी होने के कारण प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है।
- नीलगुण्ड, राधनपुर, देवली तथा करहाड़ के अभिलेखों में इन्हें गुर्जर कहा गया।
- मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट को रामका प्रतिहार तथा विशुद्ध क्षत्रिय कहा गया है।
- अरब यात्रियों ने इनके लिए 'जुर्ज' शब्द का प्रयोग किया है। अलमसूदी ने गुर्जर प्रतिहारों को 'अल गुजर' तथा राजा को 'बोरा' कहा है।
- राजशेखर ने अपने ग्रंथ 'विद्धशालभंजिका' में प्रतिहार महेन्द्रपाल को रघुकुल तिलक (सूर्यवंशी) लिखा है।
- मुहणोत नैणसी ने प्रतिहारों की 26 शाखाओं का उल्लेख किया है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने ग्रंथ 'सियूकी' में गुर्जर राज्य को 'कु-चे-लो' (गुर्जर) तथा इसकी राजधानी 'पीलोमोलो' (भीनमाल) बताया है।
- कवि पम्प ने अपने ग्रंथ पम्पभारत' में कन्नौज शासक महीपाल को गुर्जर राजा बताया है।
- कैनेडी ने प्रतिहारों को ईरानी मूल का बताया है।
- उद्योतन सूरी ने अपने ग्रंथ 'कुवलयमाला' में गुर्जर शब्द का प्रयोग एक जाति विशेष के रूप में किया है।
- डॉ. भंडारकर ने प्रतिहारा को विदेशी गुर्जर जाति की संतान माना है।

मण्डोर के प्रतिहार

- मण्डोर के प्रतिहार गुर्जर प्रतिहारों की 26 शाखाओं में से सबसे महत्त्वपूर्ण एवं प्राचीन मण्डोर के प्रतिहार थे।

- मण्डोर के प्रतिहार स्वयं को 'हरिश्चन्द्र नामक ब्राह्मण' (रोहिलद्धि)का वंशज बताते हैं।
- हरिश्चन्द्र के दो पत्नियां थी- एक ब्राह्मणी और दूसरी क्षत्राणी भद्रा। उसकी ब्राह्मणी पत्नी से उत्पन्न संतान प्रतिहार ब्राह्मण तथा क्षत्राणी भद्रा से उत्पन्न संतान क्षत्रिय प्रतिहार कहलाये।
- हरिश्चन्द्र की रानी भद्रा से चार पुत्र- भोगभट्ट, कद्दक, रज्जिल और दद्द उत्पन्न हुए।
- इन चारों ने मिलकर मण्डोर को जीता तथा यहाँ गुर्जर प्रतिहार वंश की स्थापना की।
- मण्डोर के प्रतिहारों की वंशावली हरिश्चन्द्र के तीसरे पुत्र रज्जिल से प्रारंभ होती है।

रज्जिल

- हरिश्चन्द्र के चार पुत्रों में से रज्जिल मण्डोर का शासक बना।

नागभट्ट प्रथम

- यह रज्जिल का पौत्र था।
- इसने मेड़ता को अपनी राजधानी बनाया।

शीलुक

- शीलुक ने वल्ल मण्डल के शासक भाटी देवराज को हराकर अपने राज्य की सीमा का वल्ल तक विस्तार किया।

कक्क

- यह शीलुक का पौत्र था।
- इसने मुंगेर के युद्ध में पाल वंश के शासक धर्मपाल को पराजित किया।
- इसके दो पुत्र थे- बाउक तथा कक्कुक।

बाउक

- बाउक एक प्रतापी शासक था जिसने अपने शत्रु नन्दवल्लभ को मारकर भूअकूप पर अधिकार कर लिया।
- इसका 837 ई. का 'मण्डोर (जोधपुर) का शिलालेख' प्राप्त हुआ है जिसमें बाउक ने अपने वंश का वर्णन अंकित करवाया।
- बाउक ने मयूर नामक राजा को पराजित किया था।

कक्कुक

- बाउक के बाद उसका भाई कक्कुक मण्डोर का शासक बना।
- घटियाला से प्राप्त दाेनों शिलालेख कक्कुक के समय के हैं।
- इसने रोहिंसकूप (घटियाला- वर्तमान फलौदी) के निकट गावों में बाजार बनवाये तथा व्यापार में वृद्धि की।
- कक्कुक के द्वारा घटियाला तथा मण्डोर में जयस्तम्भ भी स्थापित करवाये गये।
- कालान्तर में मण्डोर के आस-पास के क्षेत्र पर चौहानों का अधिकार हो गया लेकिन मण्डोर प्रतिहारों की इन्दा शाखा के अधीन रहा।
- इन्दा प्रतिहारों ने राठौड़ चूँडा के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित कर मण्डोर का क्षेत्र राठौड़ों को दहेज में दे दिया।
- इस घटना के साथ ही मण्डोर प्रतिहारों का राजनीतिकी इतिहास समाप्त हो गया।

भड़ोंच के गुर्जर प्रतिहार

दद्द प्रथम

- भड़ोंच के गुर्जर राज्य का संस्थापक हरिश्चन्द्र का पुत्र दद्द प्रथम था।
- इस शाखा के 629 ई. से 641 ई. के कुछ दानपत्र मिले हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि नान्दीपुर इन गुर्जर प्रतिहारों की राजधानी थी।
- दद्द प्रथम ने नागवंशियों तथा वनवासी राजा निरिहुलक के राज्य पर अधिकार किया था।

जयभट्ट प्रथम

- जयभट्ट प्रथम दद्द प्रथम का पुत्र था। इसकी उपाधि 'वीतराग' थी।
- जयभट्ट प्रथम हर्षवर्धन के समकालीन था।
- संखेड़ा दानपत्रों से उसकी विजयों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- उमेता, ललुआ तथा बेगुमरा शिलालेखों के अनुसार जयभट्ट प्रथम ने वल्मी की सेना को काठियावाड़ प्रान्त में पराजित किया था।
- इसने कलचुरियों को भी पराजित किया था।

दद्द द्वितीय

- जयभट्ट प्रथम के बाद उसका पुत्र दद्द द्वितीय शासक बना, जिसकी उपाधि 'महाराजा प्रशांतराग' थी।
- बड़ौदा के संखेड़ा नामक स्थान से दद्द द्वितीय के दानपत्र प्राप्त हुए हैं जिनकी भाषा संस्कृत तथा लिपि ब्राह्मी है।
- दद्द द्वितीय के समय हर्षवर्धन ने वल्लभी के शासक ध्रुवसेन द्वितीय को पराजित किया।
- इस समय ध्रुवसेन द्वितीय ने दद्द द्वितीय के दरबार में शरण ली, जिसके बाद दद्द द्वितीय ने हर्षवर्धन से उसका राज्य वापस दिला दिया।
- इसका राज्य विस्तार उत्तर में माही से दक्षिण में कीम तक तथा पूर्व में मालवा व खानदेश से पश्चिम में समुद्र तक था।

जयभट्ट द्वितीय- दद्द द्वितीय के बाद उसका पुत्र जयभट्ट द्वितीय शासक बना।

- यह चालुक्यों का सामन्त था।

दद्द तृतीय

- यह जयभट्ट द्वितीय का पुत्र था, जिसने पंचमहाशब्द तथा बहुसहाय नामक उपाधियाँ धारण की।
- इसने वल्मी के शासक शीलादित्य द्वितीय को पराजित किया था।

जयभट्ट चतुर्थ

- यह इस वंश का अन्तिम शासक था।
- इसने अरब आक्रमणकारियों को पराजित किया था।

- इस शाखा के गुर्जर प्रतिहारों के लिए सामंत या महासामंत शब्दों का प्रयोग मिलता है, जिससे यह सिद्ध होता है कि इन शासकों की स्वतंत्र सत्ता नहीं थी।

राजोगढ़ के गुर्जर प्रतिहार

- अलवर के राजोगढ़ से 960 ई. का शिलालेख प्राप्त हुआ है, जिससे यह प्रमाणित होता है कि यहाँ पर प्रतिहार गोत्र का गुर्जर महाराजाधिराज सावट का पुत्र मथनदेव राज्य करता था।
- राजोगढ़ शिलालेख से बहलोल लोदी के समय तक बड़गूजरों का राजोगढ़ में निवास होना सिद्ध होता है।

भीनमाल के गुर्जर (चावड़ा वंश)

- भीनमाल का गुर्जर राज्य दक्षिण के चालुक्यों तथा हर्षवर्धन के समकालीन था।
- इस चावड़ा गुर्जर राज्य की राजधानी भीनमाल थी।
- 641 ई. में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भीनमाल की यात्रा की थी, इसने राज्य का नाम कु-चे-लो तथा इसकी राजधानी पीलोमोलो (भीनमाल) बताया।
- भीनमाल के संस्कृत विद्वान महाकवि माघ ने 'शिशुपाल वध' नामक ग्रंथ लिखा।
- माघ ने सुप्रभदेव को यहाँ का शासक बताया था।
- यहाँ के ज्योतिषी ब्रह्मगुप्त ने 628 ई. में 'ब्रहस्फुट सिद्धांत' की रचना की।
- ब्रह्मगुप्त ने गणित पर खंडखाद्यक नामक ग्रंथ भीनमाल में ही लिखा था।

नागभट्ट प्रथम (730 ई.-760 ई.)

- नागभट्ट प्रथम को 'नागवलोक' तथा इसके दरबार को नागवलोक दरबार कहा जाता था।
- नागभट्ट प्रथम को प्रतिहार साम्राज्य का संस्थापक कहा जाता है।

ककुस्थ

- नागभट्ट प्रथम के बाद उसका भतीजा ककुस्थ शासक बना जिसे कक्कुक भी कहते हैं।
- इसके समय गुर्जर राज्य की सीमाएँ यथावत बनी रही।

देवराज

- ककुस्थ के बाद उसका भाई देवराज शासक बना।
- वराह अभिलेख में इसे देवशक्ति भी कहा गया है।
- यह वैष्णव धर्मावलम्बी था।

वत्सराज (783 ई. - 795 ई.)

- **वत्सराज** देवराज व भूयिका देवी का पुत्र था।
- वत्सराज भीनमाल में गुर्जर प्रतिहारों का **वास्तविक संस्थापक** कहा जाता है।
- वत्सराज ने कन्नौज के **त्रिपक्षीय संघर्ष** की **शुरुआत** की, जो 150 वर्ष तक चला।
- 150 वर्ष का त्रिपक्षीय संघर्ष **कन्नौज** को लेकर हुआ
- यह संघर्ष 8वीं सदी में प्रारंभ हुआ।
- उत्तर भारत के **गुर्जर प्रतिहार**, दक्षिण भारत के **राष्ट्रकूट वंश**, पूर्व में बंगाल के **पालवंश** के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ। इस संघर्ष में गुर्जर प्रतिहार विजयी हुए। परन्तु वत्सराज राष्ट्रकूट **राजा ध्रुव** से हारा था।
- कन्नौज को कुश स्थल व महोदय नगर के नाम से जाना जाता था। कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत गुर्जर-प्रतिहार शासक वत्सराज के समय हुई।
- सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु (647 ई.) के बाद उत्तरी भारत की राजनीति की धुरी कन्नौज पर अधिकार करने हेतु संघर्ष प्रारंभ हुआ।

त्रिपक्षीय संघर्ष के परिणाम

- कन्नौज पर (725 ई.-752 ई.) यशोवर्धन नामक शासक की मृत्यु के बाद तीन महाशक्तियों में संघर्ष प्रारंभ हुआ जो त्रिपक्षीय संघर्ष कहलाता है। ये तीन शक्तियाँ
- उत्तरी भारत के गुर्जर प्रतिहार
- पूर्व के पाल (बंगाल के)
- दक्षिण भारत के राष्ट्रकूट
- त्रिपक्षीय संघर्ष के समय कन्नौज पर शक्तिहीन आयुधवंश (इन्द्रायुध, चक्रायुध) के शासकों का शासन था।
- त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत आठवीं शताब्दी ईस्वी में हुई। त्रिपक्षीय संघर्ष का प्रारंभ प्रतिहार वंश ने किया और इसका अंत भी प्रतिहार वंश ने ही किया।
- Tripartite conflict (त्रिपक्षीय संघर्ष) का प्रथम चरण गुर्जर-प्रतिहार वत्सराज, बंगाल के पाल शासक धर्मपाल व दक्षिण के राष्ट्रकूट शासक ध्रुव के बीच हुआ।
- वत्सराज ने कन्नौज पर शासित इन्द्रायुध को हराया व उसने पाल शासक धर्मपाल को मुंगेर (मुदगगिरी) के युध्द में पराजित किया। किन्तु राष्ट्रकूट शासक ध्रुव से पराजित हुआ।
- वत्सराज को **रणहस्तिन** (युद्ध का हाथी) की **उपाधि** प्राप्त थी। वत्सराज के समय 778 ई. में **उद्योतन सूरी द्वारा 'कुवलयमाला ग्रंथ'** की तथा जिन सेन सूरी द्वारा 783 ई. में **'हरिवंश पुराण'** की रचना की गई।
- वत्सराज शैव मत का अनुयायी था।
- वत्सराज ने ओसियाँ (जोधपुर) में एक सरोवर तथा महावीर स्वामी का एक मंदिर बनवाया जो कि पश्चिम भारत का प्राचीनतम जैन मंदिर माना जाता है।
- राजस्थान में प्रतिहारों का प्रमुख **केन्द्र ओसियाँ (जोधपुर)** था। वत्सराज के शासनकाल में वलिप्रबंध नामक काव्य ग्रंथ लिखा गया। जिसमें सती प्रथा, नियोग प्रथा एवं स्वयंवर प्रथा की जानकारी मिलती है।

नागभट्ट द्वितीय (795-833 ई.)

- वत्सराज के बाद उसका पुत्र नागभट्ट द्वितीय शासक बना।
- इसकी माता का नाम सुंदर देवी था।
- नागभट्ट द्वितीय ने परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर की उपाधि धारण की थी।

राज्यपाल :- प्रतिहार शासक राज्यपाल (राजपाल) के समय महमूद गजनवी ने कन्नौज पर 1018 ई. (12वां अभियान) में आक्रमण किया, जिससे डरकर राज्यपाल कन्नौज छोड़कर गंगा पार भाग गया ।

त्रिलोचनपाल :-

- राज्यपाल के बाद त्रिलोचनपाल प्रतिहारों का शासक बना।
- जिसे **महमूद गजनवी ने 1019 ई.** में पराजित किया।

यशपाल :-

- प्रतिहार वंश का **अंतिम शासक यशपाल (1036 ई.)** था।
- 11वीं शताब्दी में कन्नौज पर गहड़वाल वंश ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया । इस प्रकार प्रतिहारों के साम्राज्य का 1093 ई. में पतन हो गया ।

- **मेवाड़ का इतिहास**

- **मेवाड़ का गुहिल वंश -** मेवाड़ रियासत राजस्थान की **सबसे प्राचीन** रियासत है, इसे मेदपाट, प्राग्वाट, शिवि जनपद आदि उपनामों से जाना जाता है। मेवाड़ का गुहिल वंशी राजघराना **एकलिंगजी (शिव) का उपासक** था, इसी कारण मेवाड़ के शासक एकलिंगनाथजी को **स्वयं के राजा / ईष्टदेव** तथा **स्वयं को** एकलिंगनाथजी का **दीवान** मानते हैं। गुहिल वंश की **कुल देवी बाण** माता है। मेवाड़ रियासत के सामन्त **'उमराव कहलाते** थे। मेवाड़ के महाराणा राजधानी छोड़ने से पहले एकलिंगजी से आज्ञा लेते थे, उसे **'आसकाँ'** कहते थे। मेवाड़ के महाराणा **'हिन्दुआ का सूरज'** कहलाते हैं क्योंकि वो स्वयं को सूर्यवंशी मानते हैं। गुहिल वंश के राजध्वज पर 'उगता सूरज एवं धनुष बाण अंकित है, तथा इसमें उदयपुर का **राजवाक्य** "जो दृढ़ राखै धर्म को, तिहिं राखै करतार" अंकित है। ये शब्द उनके स्वतंत्रता, प्रियता एवं धर्म पर दृढ रहने के संकेत देते हैं । मेवाड़ में 1877 में महाराणा के कोर्ट का नाम बदलकर **'इजलास खास'** कर दिया गया था।
- हूणों के पराभव के बाद राजस्थान में जिन क्षत्रिय (राजपूत) वंशों ने अपने राज्य स्थापित किये उनमें गुहिल वंशीय राजपूत प्रमुख हैं। **गौरीशंकर हीराचंद ओझा** ने इन्हें **विशुद्ध सूर्यवंशीय** क्षत्रिय माना है। मेवाड़ राजवंश की स्थापना ईसा की पाँचवी शताब्दी में **गुहिल नाम** के एक प्रतापी राजा ने की थी। भारत की आजादी के समय यह विश्व का सबसे पुराना राजवंश था । लगभग 1400 वर्ष की अवधि में 75 शासकों की श्रृंखला ने निर्विघ्न रूप से मेवाड़ पर शासन किया। इस वंश ने शौर्य और पराक्रम की दुनिया में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा है।

मेवाड़ रियासत के प्रमुख शासको का कालक्रम निम्न प्रकार से हैं :-

गुहिल वंश (सिसोदिया) के शासक

राजा गुहिल का जीवन परिचय :-

- **विजयभूप** ने अपनी राजधानी को अयोध्या से वल्लभीनगर में स्थानांतरित किया। यहाँ इनका शासन सदियों तक रहा । विजयभूप की 6वीं पीढ़ी में **शिलादित्य** नामक व्यक्ति **वल्लभीनगर** का शासक बना । राजस्थान के आबू में उस समय **परमार वंश** का शासन था, जिनकी राजधानी **चंद्रावती** थी । परमारों की राजकुमारी पुष्पावती के साथ शिलादित्य का विवाह हो जाता है । पुष्पावती के छः पुत्रियाँ होती हैं लेकिन दोनों को एक पुत्र की चाह थी। अगली बार जब पुष्पावती गर्भवती होती है तो वह पुत्र प्राप्ति की मन्नत मांगने के लिए आबू के पास **अबुर्दा देवी मंदिर** चली जाती है । पुष्पावती के आबू जाने के बाद पीछे से वल्लभीनगर पर पड़ौसी राज्य ने आक्रमण कर दिया । इस आक्रमण में राजा शिलादित्य व बाकी परिवार के लोग मारे जाते हैं । शिलादित्य के एक सेवक ने आबू पहुंचकर रानी पुष्पावती को इस बात की सूचना दी । **पुष्पावती** ने अपने पति शिलादित्य की मृत्यु के दुख में सती होने का फैसला किया लेकिन गर्भावस्था में होने के कारण उनकी सखियों ने ऐसा करने से उन्हें रोक दिया। स्थिति ऐसी हो गई थी कि अब वह अपने मायके भी नहीं जा सकती थीं अतः उन्होंने अन्यत्र जाने का फैसला किया। रानी पुष्पावती अपनी सखियों व सेवक के साथ जंगल के रास्ते होते हुए कुछ दिनों बाद आबू व वल्लभीनगर के मध्य स्थित **वीरनगर** नामक स्थान पर पहुंची। यहाँ वह **कमलाबाई** नामक एक विधवा व निसंतान ब्राह्मणी के घर रहने लगीं । कुछ माह बाद पुष्पावती ने एक बच्चे को जन्म दिया जिसे वह कमलाबाई को सौंपकर स्वयं सती हो गई। ऐसा माना जाता है कि पुष्पावती ने बच्चे को गुफा में जन्म दिया था इसीलिए बच्चे का नाम **गुहिल** रख दिया गया । बच्चे का पालन-पोषण ब्राह्मणी ने ही किया था।
- बालक गुहिल बचपन से ही होनहार व साहसिक परवर्ती का था । भीलों के साथ उसके अच्छे संबंध थे । वह इन भील बालकों के साथ ही खेलता हुआ बड़ा हो गया । बड़ा होने पर उसे ब्राह्मणी द्वारा अपने वंश व अपने माँ-बाप के बारे में पता चला । गुहिल इसका प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से वल्लभीनगर पहुँचा । लेकिन वहां उस समय तक उसके शत्रु का राज्य नष्ट हो चुका था । अतः गुहिल वल्लभीनगर से पुनः वीरनगर लौट आया। वीरनगर आने के बाद गुहिल ने मेवाड़ पर (ईडर के आसपास का क्षेत्र) आक्रमण करने का निश्चय किया। उस समय मेवाड़ पर मेद जाति का शासन था । गुहिल ने भीलों से प्रार्थना की कि वो मेवाड़ को जीतने में उसकी मदद करें । गुहिल ने उनसे वादा किया कि इस सहयोग के बदले में वह और उसके वंशज कभी भी भीलों से कर नहीं लेंगे, और ना ही कभी भीलों पर अत्याचार करेंगे। 566 ई. में गुहिल ने भीलों की मदद से मेदों को पराजित कर मेवाड़ पर अधिकार कर लिया।

बप्पारावल / बापा रावल (734 ई. 810 ई.)

- बप्पा रावल (713-810) मेवाड़ राज्य में गुहिल राजपूत राजवंश के संस्थापक राजा थे। **बप्पा रावल का जन्म** मेवाड़ के महाराजा गुहिल की मृत्यु के 191 वर्ष **713 ई.** में **ईडर** में हुआ। उनके पिता ईडर के शासक महेंद्र द्वितीय थे। बप्पा रावल गुहिल राजपूत राजवंश के वास्तविक संस्थापक थे (संस्थापक-गुहिलादित्य)। इसी राजवंश को **सिसोदिया** भी कहा जाता है, जिनमें आगे चलकर महान राजा राणा कुम्भा, राणा साँगा, महाराणा प्रताप हुए।
- भील समुदाय ने अरबों के खिलाफ युद्ध में बप्पा रावल का सहयोग किया। यदि बापा का राज्यकाल 30 साल का रखा जाए तो वह सन् **723** के लगभग गद्दी पर बैठा होगा। उससे पहले भी उसके वंश के कुछ प्रतापी राजा मेवाड़ में हो चुके थे, किन्तु बापा का व्यक्तित्व उन सबसे बढ़कर था। चित्तौड़ का मजबूत दुर्ग उस समय तक मोरी वंश के राजाओं के हाथ में था।
- परंपरा से यह प्रसिद्ध है कि हारीत ऋषि की कृपा से बापा ने मानमोरी को मारकर इस दुर्ग को हस्तगत किया। चित्तौड़ पर अधिकार करना कोई आसान काम न था। अनुमान है कि बापा की विशेष प्रसिद्धि अरबों से सफल युद्ध करने के कारण हुई । **सन् 712 ई.** में मुहम्मद कासिम से सिंध को जीता।
- **आदि वराह मंदिर** - यह मंदिर बप्पा रावल ने एकलिंग जी के मंदिर के पीछे बनवाया 735 ई. में हज्जात ने राजपूताने पर अपनी फौज भेजी । बप्पा रावल ने हज्जात की फौज को हज्जात के मुल्क तक खदेड़ दिया। बप्पा रावल की तकरीबन 100 पत्नियाँ थीं, जिनमें से 35 मुस्लिम शासकों की बेटियाँ थीं, जिन्हें इन शासकों ने बप्पा रावल के भय से उन्हें ब्याह दी । 738 ई. - अरब आक्रमणकारियों से युद्ध हुआ ये युद्ध वर्तमान राजस्थान की सीमा के भीतर हुआ बप्पा रावल, प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम व चालुक्य शासक विक्रमादित्य द्वितीय की सम्मिलित सेना ने अल हकम बिन अलावा, तामीम बिन जैद अल उतबी व जुनैद बिन अब्दुल रहमान अल मुरी की सम्मिलित सेना को पराजित किया **बप्पा रावल ने सिंध** के **मुहम्मद बिन कासिम** को पराजित किया बप्पा रावल ने गज़नी के शासक सलीम को पराजित किया बप्पा रावल बप्पा या बापा वास्तव में व्यक्तिवाचक शब्द नहीं है, अपितु जिस तरह "बापू" शब्द महात्मा गांधी के लिए रूढ़ हो चुका है, उसी तरह आदरसूचक "बापा" शब्द भी मेवाड़ के एक नृपविशेष के लिए प्रयुक्त होता रहा है। सिसौदिया वंशी राजा कालभोज का ही दूसरा नाम बापा मानने में कुछ ऐतिहासिक असंगति नहीं होती। इसके प्रजासरंक्षण, देशरक्षण आदि कामों से प्रभावित होकर ही संभवत: जनता ने इसे बापा पदवी से विभूषित किया था। महाराणा कुंभा के समय में रचित एकलिंग महात्म्य में किसी प्राचीन ग्रंथ या प्रशस्ति के आधार पर बापा का समय संवत् 810 (सन् 753) ई. दिया है। एक दूसरे एकलिंग माहात्म्य से सिद्ध है कि यह बापा के राज्यत्याग का समय था।
- उन्होंने शासक बनने के बाद अपने वंश का नाम ग्रहण नहीं किया, बल्कि मेवाड़ वंश के नाम से नया राजवंश चलाया था, और **चित्तौड़ को अपनी राजधानी** बनाया । बप्पा रावल एक न्यायप्रिय शासक थे। वे राज्य को अपना नहीं मानते थे, बल्कि शिवजी के एक रूप **'एकलिंग जी'** को ही उसका असली शासक मानते थे और स्वयं उनके प्रतिनिधि के रूप में शासन चलाते थे। लगभग 20 वर्ष तक शासन करने के बाद उन्होंने वैराग्य ले लिया और अपने पुत्र को राज्य देकर शिव की उपासना में लग गये। महाराणा संग्राम सिंह (राणा साँगा), उदय सिंह और महाराणा प्रताप जैसे श्रेष्ठ और वीर शासक उनके ही वंश में उत्पन्न हुए थे।
- **बप्पा रावल के सिक्के** : गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने अजमेर के **सोने के सिक्के को बप्पा रावल** का माना है। इस सिक्के का तोल 115 ग्रेन **(65 रत्ती)** है। इस सिक्के में सामने की ओर ऊपर के हिस्से में माला के नीचे श्री बोप्प लेख है, **बाईं ओर त्रिशूल है और उसकी दाहिनी तरफ वेदी पर शिवलिंग** बना है। इसके दाहिनी ओर नंदी शिवलिंग की ओर मुख किए बैठा है। शिवलिंग और नंदी के नीचे दंडवत् करते हुए एक पुरुष की आकृति है। सिक्के के पीछे की तरफ चमर, सूर्य, और छत्र के चिह्न हैं। इन सबके नीचे दाहिनी ओर मुख किए एक गौ खड़ी है और उसी के पास दूध पीता हुआ बछड़ा है। ये सब चिह्न बप्पा रावल की शिवभक्ति और उसके जीवन की कुछ घटनाओं से संबद्ध हैं। बप्पा रावल के बारे में कुछ तथ्य द्वारा बप्पा रावल को **कालभोजादित्य** के नाम से भी जाना जाता है इनके समय चित्तौड़ पर मौर्य शासक मान मोरी का राज था। 734 ई. में बप्पा रावल ने 20 वर्ष की आयु में मान मोरी को पराजित कर चित्तौड़ दुर्ग पर अधिकार किया। बप्पा रावल को **हारीत ऋषि** के द्वारा महादेव जी के दर्शन होने की बात मशहूर है।
- **एकलिंग जी का मंदिर** - उदयपुर के उत्तर में कैलाशपुरी में स्थित इस मंदिर का निर्माण 734 ई. में बप्पा रावल ने करवाया । इसके निकट हारीत ऋषि का आश्रम है।
- 753 ई. में बप्पा रावल ने 39 वर्ष की आयु में सन्यास लिया। इनका समाधि स्थान एकलिंगपुरी से उत्तर में एक मील दूर स्थित है। इस तरह इन्होंने कुल 19 वर्षों तक शासन किया। बप्पा रावल का देहान्त **नागदा** में हुआ, जहाँ इनकी समाधि स्थित है। शिलालेखों में वर्णन - **कुम्भलगढ़ प्रशस्ति** में बप्पा रावल को **विप्रवंशीय** बताया गया है आबू के शिलालेख में बप्पा रावल का वर्णन मिलता है कीर्ति स्तम्भ शिलालेख में भी बप्पा रावल का वर्णन मिलता है रणकपुर प्रशस्ति में बप्पा रावल व कालभोज को अलग-अलग व्यक्ति बताया गया है। हालांकि आज के इतिहासकार इस बात को नहीं मानते । कर्नल जेम्स टॉड को 8वीं सदी का शिलालेख मिला, जिसमें मानमोरी

(जिसे बप्पा रावल ने पराजित किया) का वर्णन मिलता है। कर्नल जेम्स टॉड ने इस शिलालेख को समुद्र में फेंक दिया।

- यह हारीत ऋषि का अनुयायी था । **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- 734 ई. में मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ पर कब्जा किया।
- राजधानी - नागदा (उदयपुर) सास बहु का मंदिर, नागदा में एक लिंग मंदिर (शिवजी) का निर्माण करवाया।
- मेवाड़ के राजा खुद को एकलिंग जी का दीवान मानते थे।
- बप्पा रावल मुस्लिम सेना को हराते हुये गजनी तक चला गया।
- इसने गजनी के शासक सलीम को हटा दिया और अपने भान्जे को वहाँ का शासक बनाया ।
- मेवाड़ में सोने के सिक्के चलाये ।
- सोने के सिक्के का भाव 115 ग्रेन था ।
- बप्पा का वास्तविक नाम **काल भोज** था।
- सी.वी वैद्य ने बाप्पा रावल को राजस्थान का चार्ल्स मेटकोफ, कहा ।

अल्लट (951-971 ई.)

- अल्लट 951 ई. में मेवाड़ के शासक बने । आहड़ से प्राप्त शक्तिकुमार का लेख 977 ई. के अनुसार अल्लट की माता महालक्ष्मी का राठौड़ वंश की होना तथा अल्लट की राणी **हरियदेवी** का हूण राजा की पुत्री होना और उस राणी का हर्षपुर गांव बसाना अंकित है, अल्लट ने आहड़ को राजधानी बनाई व यहाँ वराह मंदिर का निर्माण करवाया। यह लेख टॉड को मिला था । यह अपूर्ण लेख उदयपुर के संग्रहालय में सुरक्षित है ।
- राजा अल्लट के समय (वि. सं 1010) के शिलालेख से सारणेश्वर के मंदिर का छबना बनाया गया था।
- राजा अल्लट के समय का लेख मूल में **आदि वराह मंदिर** में लगा हुआ है जो मेवाड़ के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।
- अल्लट ने मेवाड़ में सबसे पहले नौकरशाही का गठन किया।

शक्तिकुमार (977-993 ई.)

- गुहिल शासक शक्तिकुमार के समय मे मालवा के परमार राजा मुंज ने चित्तौड़ दुर्ग पर अधिकार कर लिया।
- मुंज के वंशज राजा भोज ने "त्रिभुवन नारायण शिव मंदिर' जिसे अब ''मोकल का समिद्धेश्वर मंदिर'' कहते हैं, का निर्माण करवाया।
- राजा भोज 1012-1031 ई. के मध्य चित्तौड़ मे रहा था।
- 11 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक मेवाड़ परमारों के अधीन रहा। इसके बाद चालुक्यों ने परमारों से मेवाड़ छीन लिया।

रणसिंह (कर्णसिंह) (1158 – 68 ई.) :-

- गुहिल शासक रणसिंह जिसको कर्णसिंह भी कहते हैं, 1158 ई. मे मेवाड़ का शासक बना।
- रणसिंह के पुत्र **क्षेमसिंह** ने मेवाड़ की रावल शाखा को जन्म दिया।
- रणसिंह के अन्य पुत्र राहप ने सीसोदा ग्राम की स्थापना कर **राणा शाखा** की नींव डाली। जो **सिसोदा** में रहने के कारण सिसोदिया कहलाए।

क्षेमसिंह

- इसके दो पुत्र **सामन्तसिंह व कुमारसिंह** हुए।
- सामन्तसिंह **1172 ई.** में मेवाड़ का शासक बना लेकिन नाडौल (जोधपुर) के चौहान राजा कीतू (कीर्तिपाल) ने सामन्त सिंह से मेवाड़ राज्य छीन लिया तथा सामन्तसिंह ने वागड़ में अपना राज्य स्थापित किया।

कुमारसिंह

- कुमारसिंह (क्षेमसिंह का पुत्र) ने 1179 ई. में कीर्तिपाल को पराजित कर मेवाड़ पर पुनः अधिकार कर लिया।
- कुमारसिंह का वंशज जैत्रसिंह (1213-1253 ई.) प्रतापी और वीर राजा हुआ।

जैत्र सिंह (1213 – 1252 / 53 ई.)

- सामन्त सिंह के पश्चात् के प्रमुख शासकों में एक जैत्र सिंह 1213 ई. में मेवाड़ के शासक बने । इनका शासनकाल 1213 ई. से 1252 ई. के आस-पास था । जैत्र सिंह उस समय के मेवाड़ शासकों में सबसे शक्तिशाली शासक थे। तुर्क गुलाम शासक **इल्तुतमिश** व जैत्र सिंह के मध्य गोगुन्दा के पास भूताला (गिर्वा, उदयपुर) नामक स्थान पर युद्ध (सम्भवतः **1227 ई.** में) हुआ । समय सीमा तय नहीं होने के कारण इतिहासकारों द्वारा **इल्तुतमिश** के मेवाड़ पर आक्रमण की अवधि 1222 ई. से 1229 ई. के बीच मानी गई है। इस आक्रमण में जैत्र सिंह व इल्तुतमिश की सेनाओं के मध्य जबरदस्त टक्कर हुई जिसमें इल्तुतमिश को पीछे हटना पड़ा। हालांकि इन युद्धों में राजधानी नागदा में काफी तोड़फोड़ व नुकसान होने के कारण जैत्र सिंह ने अपनी राजधानी को नागदा से चित्तौड़ स्थानांतरित कर दिया । जैत्र सिंह की इस सफलता का प्रमाण आबू शिलालेख, चीरवा शिलालेख हैं। 1248 ई. में नासुरुद्दीन महमूद द्वारा मेवाड़ आक्रमण का भी सफलतापूर्वक प्रतिरोध किया । राजस्थानी इतिहासकार **डॉ. दशरथ शर्मा** के अनुसार जैत्र सिंह का शासनकाल मध्यकालीन मेवाड़ का स्वर्ण काल था । जैत्र सिंह के प्रमुख सेनानायकों में बालक और मदन प्रमुख थे।
- अपने पूर्वजों के अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए उसने उस समय के **सोनगरा चौहान** शासक उदयसिंह चौहान पर आक्रमण कर दिया। उदयसिंह ने जैत्रसिंह के साथ संधि कर ली तथा अपनी पुत्री चचिक देवी/रूपा देवी का विवाह जैत्रसिंह के पुत्र तेजसिंह के साथ कर दिया।
- **भूताला का युद्ध** :- जैत्रसिंह और इल्तुतमिश के बीच हुआ जिसमें जैत्रसिंह जीत गया था।
- जयसिंह सूरी की पुस्तक **'हम्मीर मदमर्दन'** भूताला युद्ध की जानकारी देती है।

चौहान वंश का इतिहास

अजमेर के चौहान

वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम)

शाकभरी का प्राचीन नाम सपादलक्ष था। सपादलक्ष का अर्थ सवा लाख गांवों का समूह। यहीं पर वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम) ने चौहान वंश की नींव डाली। इसलिए इन्हें चौहानों का आदि पुरुष भी कहते हैं। वासुदेव प्रथम शाकम्भरी/सांभर को अपनी राजधानी बनाया। सांभर झील का निर्माण भी इसी शासक ने करवाया।

पृथ्वीराज प्रथम

चौहान वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक पृथ्वीराज प्रथम था। पृथ्वीराज प्रथम ने गुजरात के भडौंच पर अधिकार कर वहां आशापूर्णा देवी के मंदिर का निर्माण करवाया।

अजयराज प्रथम

पृथ्वीराज के बाद अजयराज शासक बना। **अजयराज ने 1113 ई. में पहाडियों के मध्य अजमेरू (अजमेर) नगर की स्थापना की** और इसे नई राजधानी बनाया। अजयराज ने पहाडियों के मध्य अजमेर के दुर्ग का निर्माण करवाया। मेवाड़ के पृथ्वीराज सिसोदिया ने 15 वीं सदी में इसका नाम तारागढ़ दुर्ग कर दिया। इस दुर्ग को पूर्व का जिब्राल्टर कहा जाता है।

अर्णोराज (1133-1155 ई.)

अर्णोराज अजयराज का पुत्र था। अर्णोराज का शासनकाल 1133 -1155 ई. तक रहा।

1. **अर्णोराज ने 1137 ई. में आनासागर झील का निर्माण करवाया** ।
2. **आर्णोराज ने पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण अर्णोराज ने करवाया** ।
3. अर्णोराज को गुजरात के चालुक्य शासक कुमारपाल ने आबू के निकट युद्ध में पराजित किया था
4. अर्णोराज के पुत्र जगदेव ने अर्णोराज की हत्या कर दी इसलिए जगदेव को चौहानों में पितृहन्ता कहा जाता है।

विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) (1153-1164 ई.)

1. बीसलदेव का कार्यकाल चौहान वंश का स्वर्णकाल कहा जाता है।
2. **बीसलदेव को कविबांधव भी कहा जाता है।**
3. बीसलदेव ने हरिकेलि (नाटक) की रचना की। जिसमें शिव-पार्वती व कुमार कार्तिकेय का वर्णन है।
4. बीसलदेव दरबारी कवि **नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो ग्रन्थ की रचना की।**
5. बीसलदेव कवि **सोमदेव ने ललित विग्रहराज की रचना की।**
6. विग्रहराज चतुर्थ ने बीसलसागर तालाब (वर्तमान बीसलपुर बाँध के स्थान पर) का निर्माण करवाया था।
7. 1153 से 1156 ई. के मध्य विग्रहराज (बीसलदेव) ने अजमेर में एक संस्कृत विद्यालय का निर्माण करवाया जिसे **1200 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने संस्कृत विद्यालय को तुड़वाकर अढ़ाई दिन का झोपडाऽ बनवाया।**
8. विग्रहराज के बारे में किल होर्न ने लिखा है कि "**वह उन हिन्दू शासको में से एक था जो कालीदास व भवभूति से होड़ कर सकता था**"।

पृथ्वीराज तृतीय (पृथ्वीराज चौहान)

1177 ई. में पृथ्वीराज चौहान ने 11 वर्ष की अवस्था में राज गद्दी संभाली। उनके पिता का नाम सोमेश्वर तथा माता का नाम कर्पूरी देवी था।

रायपिथौरा – पृथ्वी राज तृतीय चौहान को यह उपाधि प्रदान की गई है।

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **पुत्र गोविंदराज चौहान** था।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **प्रधानमंत्री - कैमास (कदंबदास)**
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय की उपाधियाँ** - राय पिथौरा, दल पंगुल (विश्व विजेता) आदि।
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय के दरबारी कवि** - चंदरबरदाई, वागीश्वर, विद्यापति गौड़, जयानक, जनार्दन, आशाधर आदि।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय अजमेर के चौहान वंश का अंतिम प्रतापी शासक था, जिसने दिल्ली और अजमेर राजधानीयों से शासन किया।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय मात्र 11 वर्ष की अल्पायु में शासक बने थे, इसलिए शासन की बागडोर इसकी माँ कर्पूरी देवी ने संभाली।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने भंडानक जाति एवं नागार्जुन के विद्रोह का दमन किया था।
- **महोबा/तुमुल का युद्ध** - पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने अपनी दिग्विजय की नीति के तहत 1182 ई० में '**महोबा के युद्ध/तुमुल का युद्ध**' (उत्तर प्रदेश) में परमर्दी देव चन्देल (परमर्दी देव के सेनापति आल्हा व उदल) को पराजित किया।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय कन्नौज के राजा जयचंद गहड़वाल को हराकर उसकी पुत्री संयोगिता को स्वयंवर से उठाकर ले गया, जिससे पृथ्वीराज चौहान तृतीय एवं जयचंद गहड़वाल के बीच दुश्मनी बढ़ गयी। इसी वजह से तराइन के युद्ध में जयचंद गहड़वाल ने पृथ्वीराज चौहान तृतीय की बजाय मोहम्मद गौरी की सहायता की थी।

तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)

तराइन का प्रथम युद्ध 1191 ई० में पृथ्वीराज चौहान तृतीय व मोहम्मद गौरी के मध्य तराइन के मैदान करनाल (हरियाणा) में हुआ। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान तृतीय की सेना की ओर से गोविंदराज तोमर ने तीर चलाया जिससे मोहम्मद गौरी घायल होकर वापस गजनी चला गया। इस प्रकार पृथ्वीराज चौहान तृतीय विजय हुई।

तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)

तराइन का द्वितीय युद्ध भी पृथ्वीराज चौहान तथा मौहम्मद गौरी बीच लड़ा गया। इसमें मौहम्मद गौरी की विजय हुई।

इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान के स्वसुर जयचंद ने मोहम्मद गौरी का साथ दिया, क्योंकि पृथ्वीराज चौहान ने जयचंद की पुत्री संयोगिता का हरण कर उससे विवाह किया था।

1. पृथ्वीराज चौहान के मित्र एवं दरबारी कवि **चंद्रबरदाई ने पृथ्वीराज रासो नामक ग्रन्थ। लिखा**
2. **जयानक ने पृथ्वीराज विजय नामक ग्रन्थ लिखा।**
3. सूफी संत **ख्वाज़ा मोइनुद्दीन चिश्ती पृथ्वी राज चौहान के समय अजमेर आये।**
4. पृथ्वीराज चौहान तृतीय के घोड़े का नाम नाट्यरंभा था ।

- **रणथम्भौर के चौहान**

रणथम्भौर और दिल्ली सल्तनत

- हम्मीर चौहान (1282-1301 ई.) अपने पिता जैत्रसिंह का तीसरा पुत्र था। सभी पुत्रों में योग्य होने के कारण उसका राज्यारोहण उत्सव जैत्रसिंह ने अपने जीवनकाल में ही 1282 ई. में सम्पन्न करवा दिया था।
- वह रणथम्भौर के चौहान शासकों में अंतिम परंतु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शासक था और उसके शासनकाल की जानकारी अनेकानेक ऐतिहासिक साधनों से प्राप्त होती है। मुस्लिम इतिहासकारों, अमीर खुसरो तथा जियाउद्दीन बरनी की रचनाओं के अलावा न्यायचंद्र सूरी के हम्मीर महाकाव्य, चंद्रशेखर के सुर्जन चरित्र और बाद में लिखे गये हिन्दी ग्रन्थों - जोधराजकृत हम्मीर रासो तथा चंद्रशेखर के हम्मीर हठ में हमें हम्मीर की शूरवीरता तथा विजयों का विस्तृत विवरण मिलता है।
- दिग्विजय के बाद हम्मीर ने कोटि यज्ञों का आयोजन किया जिससे उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।
- मेवाड़ के शासक समरसिंह को पराजित कर हम्मीर ने अपनी धाक सम्पूर्ण राजस्थान में जमा दी।

हम्मीर और जलालुद्दीन खिलजी-

- हम्मीर को अपनी शक्ति बढ़ाने का मौका इसलिए मिल गया कि इस दौरान दिल्ली में कमजोर सुल्तानों के कारण अव्यवस्था का दौर चल रहा था।
- 1290 ई. में दिल्ली का सुल्तान बनने के बाद जलालुद्दीन खिलजी ने हम्मीर की बढ़ती हुई शक्ति को समाप्त करने का निर्णय लिया। सुल्तान ने झाँई पर अधिकार कर रणथम्भौर को घेर लिया किन्तु सभी प्रयत्नों की असफलता के बाद शाही सेना को दिल्ली लौट जाना पड़ा।
- सुल्तान ने 1292 ई. में एक बार फिर रणथम्भौर विजय का प्रयास किया। हम्मीर के सफल प्रतिरोध के कारण इस बार भी उसे निराशा ही हाथ लगी।
- जलालुद्दीन ने यह कहते हुए दुर्ग का घेरा हटा लिया कि "मैं ऐसे सैंकड़ों किलों को भी मुसलमान के एक बाल के बराबर महत्त्व नहीं देता।"
- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के इन अभियानों का आँखों देखा वर्णन **अमीर खुसरो ने 'मिफ्ता-उल-फुतूह'** नामक ग्रंथ में किया है।

हम्मीर और अलाउद्दीन खिलजी –

- 1296 ई. में अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा जलालुद्दीन खिलजी की हत्या कर दिल्ली का सुल्तान बन गया।

अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिये जिनके निम्नलिखित कारण थे –

1. रणथम्भौर सामरिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण था। अलाउद्दीन खिलजी इस अभेद दुर्ग पर अधिकार कर राजपूत नरेशों पर अपनी धाक जमाना चाहता था।
2. रणथम्भौर दिल्ली के काफी निकट था। इस कारण यहाँ के चौहानों की बढ़ती हुई शक्ति को अलाउद्दीन खिलजी किसी भी स्थिति में सहन नहीं कर सकता था।
3. अलाउद्दीन खिलजी से पहले उसके चाचा जलालुद्दीन खिलजी ने इस दुर्ग पर अधिकार करने के लिए दो बार प्रयास किए थे किन्तु वह असफल रहा। अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा की पराजय का बदला लेना चाहता था।
4. अलाउद्दीन खिलजी एक महत्त्वाकांक्षी और साम्राज्यवादी शासक था। रणथम्भौर पर आक्रमण इसी नीति का परिणाम था।

हम्मीर द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोहियों को शरण देना –

- नयनचन्द्र सूरी की रचना 'हम्मीर महाकाव्य' के अनुसार रणथम्भौर पर आक्रमण का कारण यहाँ के शासक हम्मीर द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही सेनापति मीर मुहम्मद शाह को शरण देना था।
- मुस्लिम इतिहासकार इसामी ने भी अपने विवरण में इसी कारण की पुष्टि की है। उन्होंने लिखा है कि 1299 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने अपने दो सेनापतियों उलूग खां व नूसरत खां को गुजरात पर आक्रमण करने के लिए भेजा था।
- गुजरात विजय के बाद जब यह सेना वापिस लौट रही थी तो जालौर के पास लूट के माल के बंटवारे के प्रश्न पर 'नव-मुसलमानों' (जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के समय भारत में बस चुके वे मंगोल, जिन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया था) ने विद्रोह कर दिया। यद्यपि विद्रोहियों का बर्बरता के साथ दमन कर दिया गया किन्तु उनमें से मुहम्मदशाह व उसका भाई कैहब्रु भाग कर रणथम्भौर के शासक हम्मीर के पास पहुँचने में सफल हो गया।
- हम्मीर ने न केवल उन्हें शरण दी अपितु मुहम्मदशाह को 'जगाना' की जागीर भी दी। चन्द्रशेखर की रचना 'हम्मीर हठ' के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी की एक मराठा बेगम से मीर मुहम्मदशाह को प्रेम हो गया था और उन दोनों ने मिलकर अलाउद्दीन खिलजी को समाप्त करने का एक षड़यंत्र रचा।

अलाउद्दीन का चित्तौड़ पर आक्रमण

- अलाउद्दीन खिलजी की तरफ से इन विद्रोहियों को सौंप देने की माँग की गई। इस माँग को जब हम्मीर द्वारा ठुकरा दिया गया तो अलाउद्दीन खिलजी की सेना ने रणथम्भौर पर आक्रमण कर दिया।

- 1299 ई. के अंत में अलाउद्दीन खिलजी ने उलूग खां, अलप खां और नुसरत खां के नेतृत्व में एक सेना रणथम्भौर पर अधिकार करने के लिए भेजी। इस सेना ने 'रणथम्भौर की कुँजी' झाँई पर अधिकार कर लिया। इसामी के अनुसार विजय के बाद उलूग खां ने झाँई का नाम बदलकर 'नौ शहर' कर दिया।
- 'हम्मीर महाकाव्य' में लिखा है कि हम्मीर इस समय कोटियज्ञ समाप्त कर 'मुनिव्रत' में व्यस्त था। इस कारण स्वयं न जाकर अपने दो सेनापतियों – भीमसिंह व धर्मसिंह को सामना करने के लिए भेजा। इन दोनों सेनापतियों ने सेना को पीछे की तरफ खदेड़ दिया तथा उनसे लूट का माल छिन लिया।
- राजपूत सेना ने शत्रु सेना पर भयंकर हमला किया जिसमें अलाउद्दीन खिलजी की सेना को पराजय का सामना करना पड़ा। शाही सेना से लूटी गई सामग्री लेकर धर्मसिंह के नेतृत्व में सेना का एक दल तो रणथम्भौर लौट गया किन्तु भीमसिंह पीछे रह गया। इस अवसर का लाभ उठाकर बिखरी हुई शाही सेना ने अलपखां के नेतृत्व में उस पर हमला कर दिया। इस संघर्ष में भीमसिंह अपने सैंकड़ों सैनिकों सहित मारा गया। भीमसिंह की मृत्यु के लिए हम्मीर ने धर्मसिंह को उत्तरदायी मानते हुए उसे अंधा कर दिया और उसके स्थान पर भोजराज को नया मंत्री बनाया।
- झाँई विजय के बाद उलूग खां ने मेहलनसी नामक दूत के साथ हम्मीर के पास अलाउद्दीन खिलजी का संदेश पुनः भिजवाया। इस संदेश में दोनों विद्रोहियों – मुहम्मदशाह व उसके भाई कैहब्रु को सौंपने के साथ हम्मीर की बेटी देवलदी का विवाह सुल्तान के साथ करने की माँग की गई थी। यद्यपि देवलदी ने राज्य की रक्षा के लिए इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेने की सुझाव दिया किन्तु हम्मीर ने संघर्ष का रास्ता चुना।
- उलूग खां ने रणथम्भौर दुर्ग पर घेरा डालकर उसके चारों तरफ पाशिब व गरगच बनवाये और मगरबों द्वारा दुर्ग रक्षकों पर पत्थरों की बौछार की। दुर्ग में भी भैरव यंत्र, ठिकुलिया व मर्कटी यंत्र नामक पत्थर बरसाने वाले यंत्र लगे थे जिनके द्वारा फैंका गया एक पत्थर संयोग से नुसरत खां को लगा । **नुसरतखां** इसमें घायल हुआ और कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई।
- हम्मीर ने इस स्थिति का फायदा उठाने के लिए दुर्ग से बाहर निकलकर शाही सेना पर आक्रमण कर दिया। इस अप्रत्याशित आक्रमण से घबराकर उलूग खां को झाँई की तरफ पीछे हटना पड़ा। उलूग खां की असफलता के बाद अलाउद्दीन खिलजी स्वयं रणथम्भौर पहुँचा।
- अमीर खुसरो ने अपनी रचना 'खजाईन-उल-फुतूह' में इस अभियान का आंखों देखा वर्णन करते हुए लिखा है कि सुल्तान ने इस आक्रमण में पाशेब, मगरबी व अर्रादा की सहायता ली।
- काफी प्रयासों के बाद भी जब अलाउद्दीन खिलजी दुर्ग को जीतने में असफल रहा तो उसने छल और कूटनीति का आश्रय लेते हुए हम्मीर के पास संधि का प्रस्ताव भेजा।
- हम्मीर द्वारा संधि के लिए अपने सेनापति रतिपाल को भेजा गया। अलाउद्दीन खिलजी ने रतिपाल व उसकी सहायता से हम्मीर के एक अन्य सेनापति रणमल को रणथम्भौर दुर्ग का प्रलोभन देकर अपनी ओर मिला लिया।
- अलाउद्दीन ने हम्मीर के एक अधिकारी को अपनी तरफ मिलाकर दुर्ग में स्थित खाद्य सामग्री को दूषित करवा दिया। इससे दुर्ग में खाद्यान सामग्री का भयंकर संकट पैदा हो गया।
- अमीर खुसरो ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि "सोने के दो दानों के बदले में चावल का एक दाना भी नसीब नहीं हो पा रहा था।"
- खाद्यान्न के अभाव में हम्मीर को दुर्ग के बाहर निकलना पड़ा किन्तु रणमल और रतिपाल के विश्वासघात के कारण उसे पराजय का मुँह देखना पड़ा।
- युद्ध के दौरान हम्मीर लड़ता हुआ मारा गया और उसकी रानी रंगदेवी के नेतृत्व में राजपूत वीरांगनाओं द्वारा जौहर किया गया। और यह रणथम्भौर का प्रथम साका कहा जाता है।
- जोधराज की रचना 'हम्मीर रासो' के अनुसार इस जौहर में मुहम्मदशाह की स्त्रियाँ भी रंगदेवी के साथ चित्ता में भस्म हो गई।
- कुछ स्थानों पर उल्लेख है कि रंगदेवी ने किले में स्थित 'पदमला तालाब' में जल जौहर किया था।
- इस दौरान हम्मीर की पुत्री **देवल देवी** ने भी जौहर किया। **"देवलदो रो आत्मसर्ग"** की घटना इसी से जुड़ी हुई है।
- हम्मीर शिव का उपासक था जिसे अपनी हठधर्मिता के लिये जाना जाता है । हम्मीर के लिये कहा जाता है कि **"तिरिया तेल हम्मीर हठ चढ़े न दूजी बार"**।
- रणथम्भोर दुर्ग पर अल्लाउद्दीन खिलजी का अधिकार हो जाने के उपरान्त अमीर खुसरो ने लिखा है कि **"कुफ का गढ़ इस्लाम का घर हो गया है"** ।
- 11 जुलाई, 1301 ई. को अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर अधिकार कर लिया। युद्ध में मीर मुहम्मदशाह भी हम्मीर की तरफ से संघर्ष करते हुए घायल हुआ।
- अलाउद्दीन खिलजी काफी क्रोधित हुआ और उसने हाथी के पैरों के नीचे कुचलवा कर मुहम्मदशाह की हत्या करवा दी।

हम्मीर का मूल्यांकन –

- हम्मीर ने अपने जीवन में कुल 17 युद्ध लड़े जिनमें से 16 में वह विजयी रहा। बार-बार के प्रयासों के बाद भी जलालुद्दीन खिलजी का रणथम्भौर पर अधिकार नहीं कर पाना हम्मीर की शूरवीरता व सैनिक योग्यता का स्पष्ट प्रमाण है।
- वह वीर योद्धा ही नहीं अपितु एक उदार शासक भी था।

❖ राजस्थान के लोक देवता

- ➢ राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में चबूतरेनूमा बने हुए लोकदेवताओं के पूजा स्थल को 'देवरें' कहलाते हैं तो अलौकिक शक्ति द्वारा किसी कार्य को करना अथवा करवा देना 'पर्चा देना' कहलाता है।
- ➢ मारवाड़ के पंच पीर - (1) गोगाजी (2) पाबूजी (3) हड़बूजी (4) रामदेव जी (5) मेंहाजी।
  पाबू, हड़बू, रामदे, मांगलिया मेंहा।
  पाँचों पीर पधारजो गोगाजी गेहा।
- ➢ **गोगाजी चौहान**

- पंच पीरों में सर्वाधिक प्रमुख स्थान।
- जन्म - संवत् 1003 में, जन्म स्थान - ददरेवा (चूरू)।
- ये चौहान वंश के थे।
- पिता - जेवरजी चौहान, माता - बाछल दे,
- पत्नी - कोलुमण्ड (फलौदी) की राजकुमारी केलमदे (मेनलदे)।
- केलमदे की मृत्यु साँप के कांटने से हुई जिससे क्रोधित होकर गोगाजी ने अग्नि अनुष्ठान किया। जिसमें कई साँप जलकर भस्म हो गये फिर साँपों के मुखिया ने आकर उनके अनुष्ठान को रोककर केलमदे को जीवित करते हैं। तभी से गोगाजी नागों के देवता के रूप में पूजे जाते हैं।
- गोगाजी का अपने मौसेरे भाईयों अर्जन व सुर्जन के साथ जमीन जायदाद को लेकर झगड़ा था। अर्जन - सुर्जन ने मुस्लिम आक्रान्ताओं (महमूद गजनवी) की मदद से गोगाजी पर आक्रमण कर दिया। गोगाजी वीरतापूर्वक लड़कर शहीद हुए।
- युद्ध करते समय गोगाजी का सिर ददरेवा (चूरू) में गिरा इसलिए इसे शीर्ष मेडी (शीषमेडी) तथा धड़ नोहर (हनुमानगढ़) में गिरा इसलिए इसे धड़मेड़ी / धुरमेड़ी / गोगामेड़ी भी कहते हैं।
- बिना सिर के ही गोगाजी को युद्ध करते हुए देखकर महमूद गजनवी ने गोगाजी को जाहिर पीर (प्रत्यक्ष पीर) कहा।
- उत्तर प्रदेश में गोगाजी को जहर उतारने के कारण जहर पीर/जाहर पीर भी कहते हैं।
- गोगामेड़ी का निर्माण फिरोजशाह तुगलक ने करवाया।
- गोगामेड़ी के मुख्य द्वार पर बिस्मिल्लाह लिखा है तथा इसकी आकृति मकबरेनुमा है।
- गोगामेड़ी का वर्तमान स्वरूप बीकानेर के महाराजा गंगासिंह की देन है।
- प्रतिवर्ष गोगानवमी (भाद्रपद कृष्णा नवमी) को गोगाजी की याद में गोगामेड़ी, हनुमानगढ़ में भव्य मेला भरता है।
- गोगाजी की आराधना में श्रद्धालु सांकल नृत्य करते हैं।
- गोगामेड़ी में एक हिन्दू व एक मुस्लिम पुजारी है।
- प्रतीक चिह्न - सर्प।
- खेजड़ी के वृक्ष के नीचे गोगाजी का निवास स्थान माना जाता है।
- गोगाजी की ध्वजा सबसे बड़ी ध्वजा मानी जाती है।
- 'गोगाजी की ओल्डी' नाम से प्रसिद्ध गोगाजी का अन्य पूजा स्थल - साँचौर ।
- गोगाजी से सम्बन्धित वाद्य यंत्र - डेरू।
- किसान वर्षा के बाद खेत जोतने से पहले हल व बैल को गोगाजी के नाम की राखी गोगा राखड़ी बांधते हैं।
- सवारी - नीली घोड़ी, गोगा बाप्पा नाम से भी प्रसिद्ध है।
- गोगाजी की भक्ति में गाए गए गीतों को पीर के सोल कहा जाता है।
- गोगाजी का राज्य हांसी से गारा तक विस्तृत था।
- यह एक गौरक्षक थे।

- ➢ **पाबूजी राठौड़**

- जन्म - 1239 ई. में, जन्म स्थान - कोलुमण्ड गाँव (फलौदी) में हुआ ।
- पिता - धाँधल जी राठौड़, माता - कमलादे
- पत्नी – फूलमदे/ सुपियार दे सोढ़ी।
- फूलमदे अमरकोट के राजा सूरजमल सोढ़ा की पुत्री थी।
- पाबूजी की घोड़ी- केसर कालमी (यह काले रंग की घोड़ी उन्हें देवल चारणी ने दी, जो जायल नागौर के काछेला चारण की पत्नी थी)।
- मारवाड़ में साण्डे (ऊँटनी) लाने का श्रेय पाबूजी को जाता है।
- पाबूजी 'ऊँटों के देवता', 'गौरक्षक देवता' तथा 'प्लेग रक्षक देवता' के रूप में प्रसिद्ध है।
- पाबूजी को 'लक्ष्मण का अवतार' माना जाता है।
- ऊंटों की पालक जाति राईका/रेबारी/देवासी के आराध्य देव पाबूजी हैं।

- पाबूजी की जीवनी 'पाबू प्रकाश' के रचयिता आशिया मोड़जी।
- हरमल व चाँदा डेमा पाबूजी के रक्षक थे।
- माघ शुक्ला दशमी तथा भाद्रपद शुक्ला दशमी को कोलुमण्ड गाँव (फलौदी) में पाबूजी का प्रसिद्ध मेला भरता है।
- पाबूजी के पवाड़े (गाथा गीत) प्रसिद्ध हैं, जो माठ वाद्य यंत्र के साथ गाये जाते हैं।
- प्रतीक चिह्न - भाला लिए हुए अश्वारोही तथा बायीं ओर झुकी हुई पाग।
- सन् 1276 ई. में जोधपुर के देचू गाँव में देवलचारणी की गायों को जींद राव खींची से छुड़ाते हुए पाबूजी वीर गति को प्राप्त हुए, पाबूजी की पत्नी उनके वस्त्रों के साथ सती हुई। इस युद्ध में पाबूजी के भाई बूड़ोजी भी शहीद हुए।
- पाबूजी के भतीजे व बूड़ोजी के पुत्र रूपनाथ जी ने जींदराव खींची को मारकर अपने पिता व चाचा की मृत्यु का बदला लिया। रूपनाथ जी को भी लोकदेवता के रूप में पूजते हैं। राजस्थान में रूपनाथ जी के प्रमुख मंदिर कोलुमण्ड (फलौदी) तथा सिम्भूदड़ा (नोखा मण्डी, बीकानेर) में हैं। हिमाचल प्रदेश में रूपनाथ जी को बालकनाथ नाम से भी जाना जाता है।
- पाबूजी की फड़ नायक जाति के भील भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- सर्वाधिक फड़ें तथा सर्वाधिक लोकप्रिय/प्रसिद्ध फड़ पाबूजी की फड़ है।
- रामदेवजी की फड़ कामड़ जाति के भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- सबसे प्राचीन फड़, सबसे लम्बी फड़ तथा सर्वाधिक प्रसंगों वाली फड़ देवनारायण जी की फड़ है।
- भारत सरकार ने राजस्थान की जिस फड़ पर सर्वप्रथम डाक टिकट जारी किया वह देवनारायण जी की फड़ (2 सितम्बर, 1992 को 5 रु. का डाक टिकट) है।
- देवनारायण जी की फड़ गुर्जर जाति के कुँआरे भोपे जंतर वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- भैंसासुर की फड़ का वाचन नहीं होता है। यह **फड़** बावरी जाति में लोकप्रिय है। अपराध करने से पूर्व यह जाति इस **फड़** के दर्शन शगुन के रूप में करती है।
- रामदला-कृष्णदला की फड़ (पूर्वी राजस्थान में) एकमात्र ऐसी फड़ है जिसका वाचन दिन में होता है। इस **फड़** के **वाचन** में वाद्य यंत्र का प्रयोग नहीं **होता** है।

➢ **<u>हड़बूजी</u>**

- मारवाड़ के पंचपीरों में से एक हड़बूजी के पिता का नाम- मेहाजी सांखला (भुंडेल, नागौर)।
- हड़बूजी बाबा रामदेवजी के मौसेरे भाई थे।
- गुरु - बालीनाथ।
- संकटकाल में हड़बूजी ने जोधपुर के राजा राव जोधा को तलवार भेंट की और राव जोधा ने इन्हें बेंगटी (फलौदी) की जागीर प्रदान की।
- बेंगटी में इनका प्रमुख पूजा स्थल है।
- यहाँ हड़बूजी की गाड़ी (छकड़ा व ऊँट गाड़ी) की पूजा होती है।
- इस गाड़ी में हड़बूजी विकलांग गायों के लिए दूर-दूर से घास भरकर लाते थे।
- हड़बूजी शकुन शास्त्र के ज्ञाता थे।
- हड़बूजी की सवारी सियार मानी जाती है।

➢ **<u>रामदेवजी</u>**

- रामसापीर, रुणेचा रा धणी व पीरां रा पीर नाम से प्रसिद्ध है।
- रामदेव जी को कृष्ण का तथा उनके बड़े भाई बीरमदेव को बलराम का अवतार माना जाता है।
- पिता का नाम- अजमलजी तंवर, माता-मैणा दे, पत्नी-नेतल दे (नेतल दे अमरकोट के राजा दल्लेसिंह सोढा की पुत्री थी।)
- लोकमान्यता के अनुसार रामदेवजी का जन्म उंडूकाश्मीर गाँव (शिव-तहसील, बाड़मेर) में भाद्रपद शुक्ला द्वितीया को हुआ।
- समाधि- रुणेचा (जैसलमेर) में रामसरोवर की पाल पर भाद्रपद शुक्ला दशमी को ली।
- रामदेवजी के लिए नियत समाधि स्थल पर उनकी मुँह बोली बहिन डाली बाई ने पहले समाधि ली।
- रामदेवजी की सगी बहिनें - लाछा बाई, सुगना बाई।
- रामसापीर उपनाम से प्रसिद्ध बाबा रामदेवजी ने अपने जीवन काल में कई परचे (चमत्कार) दिखाये। उन्होंने मक्का से पधारे पंचपीरों को भोजन कराते समय उनका कटोरा प्रस्तुत कर उन्हें चमत्कार दिखाया जिससे मक्का के उन पीरों ने कहा कि हम तो केवल पीर हैं, पर आप तो पीरों के पीर हैं।
- प्रमुख शिष्य- हरजी भाटी, आईमाता।
- गुरु का नाम-बालीनाथ।
- बालीनाथजी का मंदिर-मसूरिया, जोधपुर में।
- सातलमेर (पोकरण) में भैरव राक्षस का वध रामदेवजी ने किया।
- नेजा - रामदेवजी की पचरंगी ध्वजा।
- जातरू - रामदेवजी के तीर्थ यात्री।
- रिखियां - रामदेवजी के मेघवाल भक्त।
- जम्मा - रामदेवजी की आराधना में श्रद्धालु लोग रिखियों से जम्मा जागरण (रात्रि कालीन सत्संग) दिलवाते हैं।
- कुष्ठ रोग निवारक देवता, हैजा रोग के निवारक देवता।
- सवारी - लीला (हरा) घोड़ा।
- कामड़ पंथ का प्रारम्भ किया।

- राजस्थान में कामड़ पंथियों का प्रमुख केन्द्र पादरला गाँव (पाली) इसके अलावा पोकरण (जैसलमेर) व डीडवाना (डीडवाना-कुचामन) में भी कामड़ पंथी निवास करते हैं।
- तेरहताली नृत्य- रामदेवजी की आराधना में कामड़ जाति की महिलाएं मंजीरे वाद्य यंत्र का प्रयोग करके प्रसिद्ध तेरहताली नृत्य करती हैं। यह बैठकर किया जाने वाला एकमात्र लोकनृत्य है।
- रामदेवजी की फड़ कामड़ जाति के भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- प्रतिवर्षभाद्रपद शुक्ला द्वितीया को रामदेवरा (जैसलमेर) में बाबा रामदेवजी का भव्य मेला भरता है।
- पश्चिमी राजस्थान का यह सबसे बड़ा मेला साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए प्रसिद्ध है।
- रामदेवजी का प्रतीक चिह्न - पगल्यां (पत्थर पर उत्कीर्ण रामदेवजी के प्रतीक के रूप में दो पैर)।
- रामदेवजी एकमात्र ऐसे लोकदेवता थे, जो कवि थे। 'चौबीस बाणियाँ' रामदेवजी की प्रसिद्ध रचना है।
- रामदेवरा में स्थित रामदेवजी के मंदिर का निर्माण बीकानेर के महाराजा गंगासिंह ने करवाया था।
- रामदेवजी का पूजा स्थल-रामदेवरा/रुणेचा (जैसलमेर), मसूरिया (जोधपुर), बिराठिया (पाली), बिठूजा (बालोतरा), सूरताखेड़ा (चित्तौड़गढ़), छोटा रामदेवरा (जूनागढ़, गुजरात)।

मेहाजी

- मांगलियों के ईष्ट देव होने के कारण इन्हें मांगलिया मेहाजी कहते हैं।
- इनके घोड़े का नाम - किरड़ काबरा।
- जैसलमेर के राव राणंगदेव भाटी से युद्ध करते हुए शहीद।
- बापिनी गाँव (फलौदी) में प्रमुख पूजा स्थल है ।
- कृष्ण जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्णा अष्टमी) को लोकदेवता में हाजी की जन्माष्टमी मनाई जाती है।

तेजाजी

- जन्म - 1074 ई., खड़नाल/खरनाल (नागौर) में माघ शुक्ला चतुर्दशी को।
- तेजाजी नागवंशीय जाट थे।
- पिता का नाम-ताहड़जी जाट
- माता का नाम-राजकुंवरी/रामकुंवरी
- पत्नी-पेमलदे (पनेर के रायचन्द्र की पुत्री थी)।
- 7 सितम्बर, 2011 को सचिन पायलट ने खरनाल (नागौर) में तेजाजी पर 5 रु. का डाक टिकट जारी किया गया।
- तेजाजी ने लाछा गुर्जरी की गायों को मेर (वर्तमान आमेर) के मीणाओं से छुड़ाया।
- सुरसरा (किशनगढ़, अजमेर) में जीभ पर साँप काटने से तेजाजी की मृत्यु।
- घोड़ी का नाम-'लीलण'।
- तेजाजी की मृत्यु की सूचना उनकी घोड़ी ने घर आकर दी।
- तेजाजी के पुजारी को घोड़ला कहते थे।
- काला और बाला के देवता, कृषि कार्यों के उपकारक देवता, गौरक्षक देवता के रूप में पूजनीय।
- तेजाजी की याद में प्रतिवर्ष तेजादशमी (भाद्रपद शुक्ला दशमी) को परबतसर (डीडवाना-कुचामन) में भव्य पशु मेला भरता है जो आय की दृष्टि से राजस्थान का सबसे बड़ा पशु मेला है।
- सेंदरिया, भावतां, सुरसरा (अजमेर), ब्यावर तथा खरनाल (नागौर) में तेजाजी के प्रमुख पूजा स्थल है।
- साँप काटने पर तेजाजी के भोपे चबूतरे (तेजाजी के थान) पर पीड़ित व्यक्ति को ले जाकर गौं मूत्र से कुल्ला करके तथा दाँतों में गोबर की राख दबाकर साँप कांटे हुए स्थान से जहर निकालना प्रारम्भ करता है।

देवनारायणजी

- जन्म - 1243 ई., में माघ षष्ठी को गोठा दंडावण आसींद (भीलवाड़ा) में हुआ था।
- देवनारायण जी के बचपन का नाम-उदयसिंह था।
- बगड़ावत नागवंशीय गुर्जर परिवार में जन्म हुआ।
- इनके अनुयायी गुर्जर जाति के लोग इन्हें विष्णु का अवतार मानते हैं।
- पिता- सवाईभोज, माता- सेढू खटाणी देवी, पत्नी-पीपलदे।
- घोड़ा – लीलागर
- देवनारायणजी के जन्म से पूर्व ही इनके पिता सवाईभोज भिनाय के शासक से संघर्ष करते हुए अपने 23 भाईयों सहित शहीद हो गये। बाद में देवनारायणजी ने अपने पिता की मृत्यु का बदला लिया व लम्बी लड़ाईयाँ लड़ी, जिसकी गाथा 'बगड़ावत महाभारत' के रूप में प्रसिद्ध है।
- देवजी की फड़-गुर्जर जाति के कुँआरे भोपे जंतर वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- इनके मन्दिर में मूर्ति की बजाय ईंटों की पूजा नीम की पत्तियों के साथ होती है।

अध्याय – 4

राजस्थान के लोकसंगीत

- संगीत से तात्पर्य गायन, वादन एवं नृत्य से है और यही तीन पक्ष इसके विकास के द्योतक हैं ।
- संगीत कला को दो भागों में बांटा जाता है-

शास्त्रीय संगीत

- यह एक विशिष्ट गायन, वादन तथा नृत्य शैली का सूचक होता है जिसमें निश्चित नियमों का पालन किया जाता है ।
- इसमें भारतीय एवं ईरानी संगीत का समन्वय हुआ है ।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा का संरक्षण विशिष्ट गुरु तथा शिष्य परम्परा के संयोग से बनता है, उस विशिष्ट गुरु शिष्य परम्परा को ' घराना ' कहा जाता है ।

लोकसंगीत

- **शास्त्रीय संगीत**
  - हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत
    - हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल को छोडकर सम्पूर्ण भारत में प्रचलित है। ध्रुपद,धमर,होरी,ख्याल,टप्पा,चतुरंग, रससागर,तराना, सरगम और ठुमरी जैसी हिंदुस्तानी संगीत में गायन की दस मुख्य शैलियाँ हैं।
  - कर्नाटक शास्त्रीय संगीत
    - कर्नाटक संगीत कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल तक सीमित है।
- **लोक गीत**
  - राजस्थानी लोकगीतों में विरह गीत, श्रंगारिक गीत, महफ़िल गीत, चेतावनी गीत, फसल गीत लोकदेवताओं व देवियों से सबंधित तथा क्षेत्र विशेष के होते है

- **राजस्थान में गायन, वादन व नृत्य के प्रमुख घराने**

राजस्थान में गायन के प्रमुख घराने

घराना	प्रवर्तक	विशेषताएँ
जयपुर घराना	मनरंग (भूपत खां)	ख्याल गायन शैली का घराना है। मुहम्मद अली खां कोठी वाले इस घराने के प्रसिद्ध संगीतज्ञ हुए हैं।
पटियाला घराना	फ़तेह अली व अली बख्श(टोंक के नवाब इब्राहीम के दरबारी)	यह जयपुर घराने की उपशाखा है। (प्रसिद्ध पाकिस्तानी गजल गायक गुलाम अली इसी घराने के सदस्य है)
मेवाती घराना	उस्ताद घग्घे नजीर खां	इन्होंने जयपुर की ख्याल गायकी को ही अपनी विशिष्ट शैली में विकसित कर यह घराना प्रारम्भ किया।
डागर घराना	बहराम खां डागर	महाराजा रामसिंह के दरबारी गायक
रंगीला घराना	रमजान खां 'मियाँ रंगीले	मियाँ रंगीले जोधपुर के गायक इमाम बख्श के शिष्य थे।

राजस्थान में वादन के प्रमुख घराने		
घराना	**प्रवर्तक**	**विशेषताएँ**
बीनकार घराना(जयपुर	रज्जब अली बीनकार	रज्जब अली जयपुर के महाराजा रामसिंह के दरबार में प्रसिद्ध बीनकार थे।
सेनिया घराना(जयपुर)	तानसेन के पुत्र सूरत सेन	यह सितारवादियों का घराना है। इस घराने के गायक ध्रुपद की गौहर वाणी व खण्डारवाणी में सिद्धहस्त थे।

राजस्थान में नृत्य के प्रमुख घराने		
घराना	**प्रवर्तक**	**विशेषताएँ**
जयपुर का कथक घराना	भानूजी	उत्तर भारत के प्रसिद्ध शासीय नृत्य कथक का उद्भव राजस्थान में 13वीं सदी में माना जाता है।

राजस्थान की प्रमुख स्थानीय गायन शैलियाँ

(i) माँड गायिकी

- माँड क्षेत्र (जैसलमेर) में गाई जाने वाली राग ' माँड ' राग कहलाई।
- राज्य की प्रसिद्ध माड गायिकाएँ - श्रीमती बन्नो बेगम (जयपुर) स्व . हाजन अल्लाह - जिलाह बाई (बीकानेर), स्व . गवरी देवी (बीकानेर), गवरी देवी (पाली), माँगीबाई (उदयपुर), श्रीमती जमीला बानो (जोधपुर) आदि ।

(ii) मांगणियार गायिकी

- माँगणियार मुस्लिम मूलतः सिंध प्रांत के है।
- राजस्थान की पश्चिमी मरुस्थलीय सीमावर्ती क्षेत्रों बाड़मेर, जैसलमेर, फलौदी आदि में मांगणियार जाति के लोगों द्वारा अपने यजमानों के यहाँ मांगलिक अवसरों पर गायी जाती है।
- मांगणियार गायिकी में मुख्यतः 6 राग एवं 36 रागनियाँ होती है ।
- इनके प्रमुख वाद्य कमायचा, खड़ताल आदि है।
- प्रमुख मांगणियार कलाकार -साकर खाँ मांगणियार (कमायचा वादक) साफर खाँ (ढोलक वादक), स्व . सद्दीक खाँ मांगणियार (प्रसिद्ध खड़ताल वादक) ।

(iii) लंगा गायिकी

- बीकानेर, बाड़मेर, फलौदी एवं जैसलमेर जिले के पश्चिमी क्षेत्रों में मांगणियारों की तरह मांगलिक अवसरों एवं उत्सवों पर लंगा जाति के गायकों द्वारा गायी जाने वाली गायन शैली 'लंगा गायिकी' कहलाती है।
- सारंगी व कमायचा इनके प्रमुख वाद्य है।
- राजपूत इनके यजमान होते है।
- प्रमुख लंगा कलाकार- फूसे खाँ, महरदीन लंगा, अल्लादीन लंगा, करीम खाँ लंगा ।

(iv) तालबंदी गायिकी

- राजस्थान के पूर्वी अंचल में लोक गायन की शास्त्रीय परम्परा है, जिसमें राग-रागनियों से निबद्ध प्राचीन कवियों की पदावलियाँ सामूहिक रूप से गायी जाती है, इसे ही 'तालबंदी' गायिकी कहते है ।
- इसमें प्रमुख वाद्य सारंगी, हारमोनियम, ढोलक, तबला व झाँझ है एवं बीच-बीच में नगाड़ा भी बजाते है।भी बजाते है।

राजस्थान के प्रमुख संगीत ग्रंथ

❖ **संगीत राज-** इसकी रचना मेवाड़ के महाराणा कुम्भा द्वारा 15 वीं सदी में की गई।

➢ ये पाँच कोषो पाठ्य, गीत, वाद्य, नृत्य और रस रत्नकोष आदि में विभक्त है। इसे 'उल्लास कहा गहै।

➢ उल्लास को पुनः परीक्षण में बांटा गया है।

➢ इसमें ताल, राग, वाद्य, नृत्य, रस, स्वर आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है।

❖ **राग मंजरी**

➢ इसकी रचना पुण्डरीक विठ्ठल ने की थी।

➢ ये जयपुर महाराजा मानसिंह के दरबारी थे।

➢ प्रमुख लंगागायिकी कलाकार :- महरदीन लंगा, अल्लादीन लंगा, करीम खां लंगा, फुसे खां

❖ **राग माला**

➢ इस ग्रंथ की रचना भी पुण्डरीक विठ्ठल ने की थी।

➢ इसमें राग रागिनी व शुद्ध स्वर-सप्तक का उल्लेख किया गया है।

- यह रोप-वे कोलकाता की दामोदर रोप-वे इंफ्रा लिमिटेड कम्पनी द्वारा निर्मित किया गया है।
- **राजस्थान का पहला रोप-वे सुंधा माता (जालौर) में स्थित है इसका निर्माण 2006** में किया गया तथा इसकी लम्बाई 800 मीटर है ।

पर्यटन इकाई नीति-2015

- इस नीति में पर्यटन क्षेत्र की विभिन्न इकाईयों को व्यापक रूप से परिभाषित किया गया है जिनमें होटल, मोटेल, हैरिटेज होटल, बजट होटल, रेस्टोरेन्ट, केम्पिंग साइट, माइस / कन्वेंशन सेंटर, स्पोर्ट्स रिसोर्ट, रिसोर्ट, हैल्थ रिसोर्ट, एम्यूजमेंट पार्क, एनिमल सफारी पार्क, रोप वे, ट्यूरिज्म लग्जरी कोच, केरावेन एवं क्रूज पर्यटन सम्मिलित हैं।
- नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में नवीन पर्यटन इकाईयों का भूमि सम्परिवर्तन निःशुल्क होगा।
- नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में वर्तमान हैरिटेज सम्पत्तियों एवं हैरिटेज होटलों को भू-सम्परिवर्तन शुल्क से मुक्त किया गया है।
- हैरिटेज होटलों को पट्टा जारी करने के लिए पात्र माना जाएगा।
- सभी पर्यटन इकाईयाँ अपने लिए मानव संसाधन प्रशिक्षित करने हेतु राजस्थान कौशल एवं आजीविका विकास निगम के अन्तर्गत रोजगार से जुड़े कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए प्रशिक्षण संस्थान के अनुमोदन के लिए पात्र होंगी।
- गुरुशिखर के नीचे **राज्य का एकमात्र पर्वतीय पर्यटन स्थल "माउंट आबू" स्थित है।**

राजस्थान का भूगोल

अध्याय – 1

स्थिति एवं विस्तार

राजस्थान की स्थिति:- प्रिय छात्रों, राजस्थान की स्थिति को हम सर्वप्रथम पृथ्वी पर तत्पश्चात एशिया में और फिर भारत में देखेंगे ।

(1) राजस्थान की स्थिति "पृथ्वी" पर: - पृथ्वी पर राजस्थान की स्थिति को समझने से पहले निम्नलिखित अन्य महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को समझना होगा –

(क) अंगारा लैंड / यूरेशियल प्लेट

(ख) गोंडवाना लैंड प्लेट

(ग) टेथिस सागर

(घ) पेंजिया

(ङ) पेंथालासा

नोट:- प्रिय छात्रों, कृपया ध्यान दें कि – आज से लाखों करोड़ों वर्ष पूर्व पृथ्वी दो भागों में विभाजित थी ।

1. स्थल
2. जल

- जैसा कि आज भी दिखाई देता है, लेकिन वर्तमान में यदि हम स्थल मंडल को देखें तो हमें यह कई भागों में विभाजित दिखाई देता है, जैसे सात महाद्वीप अलग - अलग हैं ।
- उनके भी कई देश एक - दूसरे से काफी अलग अलग है । लेकिन लाखों – करोड़ों वर्ष पूर्व संपूर्ण स्थलमंडल सिर्फ एक ही था ।
- इसी **स्थलीय क्षेत्र को "पेंजिया"** के नाम से जानते थे तथा शेष बचे हुए भाग को **(जल वाले क्षेत्र को) "पेंथालासा"** के नाम से जानते थे ।
- नीचे दिए गए मानचित्र से समझने की कोशिश कीजिए-

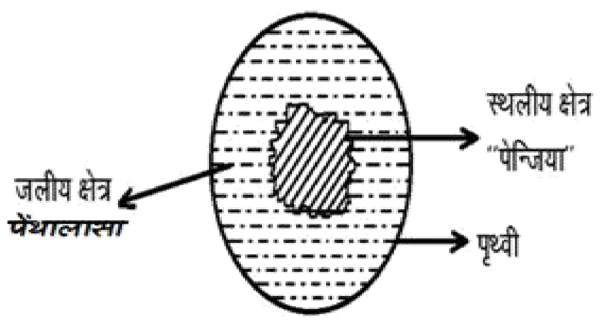

- प्रिय छात्रों, पृथ्वी परिक्रमण एवं परिभ्रमण गति करती है अर्थात् अपने स्थान पर भी (1 दिन में) घूमती है, और सूर्य का चक्कर भी लगाती है। पृथ्वी की इस गति की वजह से स्थल मंडल की प्लेटों में हलचल होने की वजह से पेंजिया (स्थलीय क्षेत्र) दो भागों में विभाजित हो गया जिसके उत्तरी भाग में उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया का निर्माण हुआ। इस

स्थलीय क्षेत्र को **"अंगारा लैंड / यूरेशियन प्लेट"** के नाम से जानते है।

इसके दूसरे भाग (दक्षिणी) में दक्षिणी अमेरिका, दक्षिणी एशिया, अफ्रीका तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ, इस क्षेत्र को **"गोंडवाना लैंड"** 'प्लेट' के नाम से जानते है।

- दोनों प्लेटों के बीच में विशाल सागर था जिसे "टेथिस सागर" के नाम से जानते थे।
- इसको नीचे दिए गए मानचित्र की सहायता से समझते हैं-

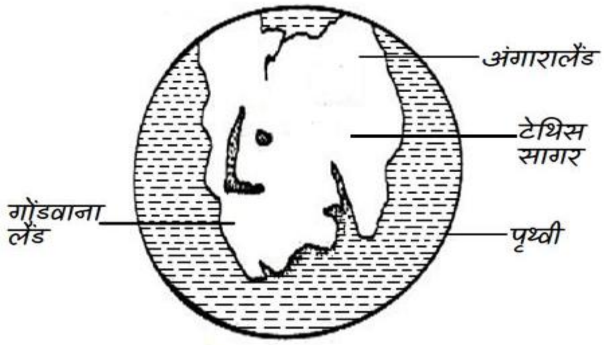

विशेष नोट:- राजस्थान का पश्चिमी रेगिस्तान तथा रेगिस्तान में स्थित खारे पानी की झीलें "टेथिस सागर" के अवशेष है तथा राजस्थान का मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्र (अरावली पर्वतमाला) एवं दक्षिण पूर्वी पठारी भाग "गोंडवाना लैंड" प्लेट के हिस्से है।

टेथिस सागर- टेथिस सागर को गोंडवाना लैंड प्लेट और यूरेशियन प्लेट के मध्य स्थित एक सागर के रूप में कल्पित किया जाता है जो कि एक छिछला और संकरा सागर था, और इसी में जमा अवसादों के प्लेट विवर्तनिकी के परिणाम स्वरुप अफ्रीकी और भारतीय प्लेटों के यूरेशियन प्लेट के टकराने के कारण हिमालय और आल्प्स जैसे महान पहाड़ों की रचना हुई है।

प्रिय छात्रों, अब तक हम अंगारा लैंड, गोंडवाना लैंड, टेथिस सागर, पेंजिया तथा पेंथाल्जा का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर चुके है। अब हम **पृथ्वी पर राजस्थान की** स्थिति, का अध्ययन करते है। नीचे दिए गए मानचित्रों को ध्यान से समझिए-

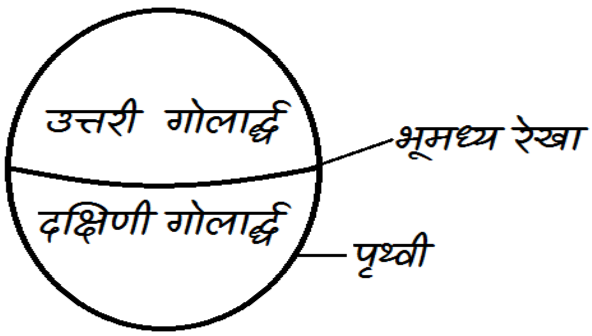

मानचित्र - 1

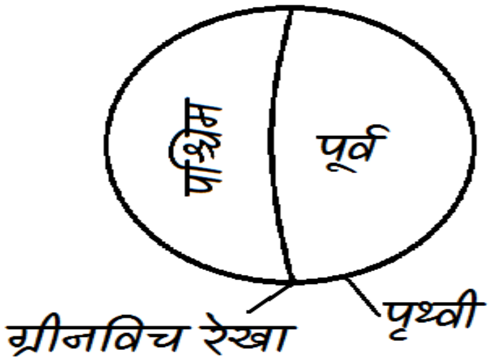

मानचित्र - 2

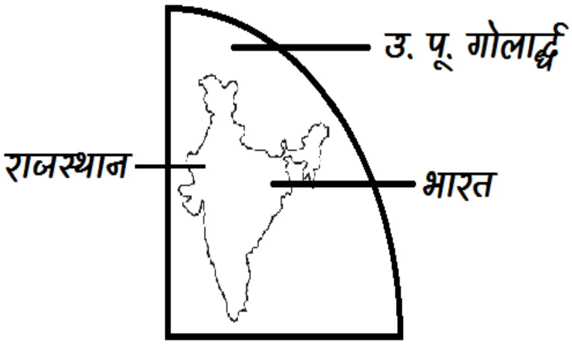

मानचित्र - 3

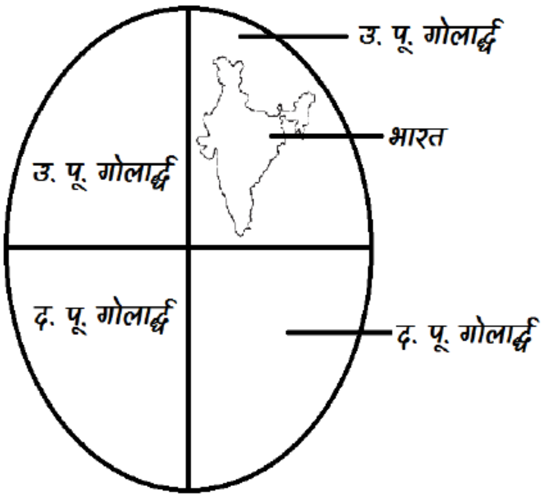

मानचित्र - 4

प्रिय छात्रों ऊपर दिए गए मानचित्र के बारे में एक बार समझते हैं।

- **पृथ्वी को भूमध्य रेखा** (विषुवत रेखा) से दो **भागों में** विभाजित किया गया है -

1. उत्तरी गोलार्द्ध
2. दक्षिणी गोलार्द्ध

इसे आप मानचित्र - 1 के माध्यम से समझ सकते हैं।

इसी प्रकार ग्रीनविच रेखा पृथ्वी को दो भागों में बांटती है-

1. पूर्वी क्षेत्र
2. पश्चिमी क्षेत्र

जिसे आप मानचित्र – 2 में देख सकते है।

नोट :-

1. विश्व

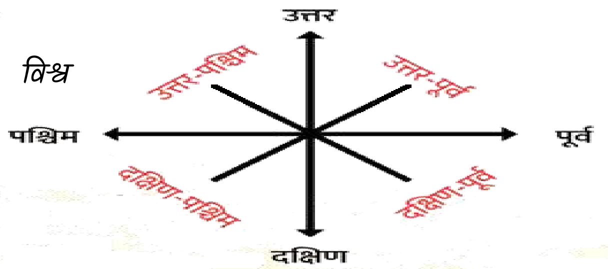

(अर्थात् **पृथ्वी पर**) में राजस्थान **"उत्तर - पूर्व"** दिशा में स्थित है। (देखे मानचित्र- 3)

2. एशिया महाद्वीप में राजस्थान **"दक्षिणी -पश्चिम"** दिशा में स्थित है। (देखिए मानचित्र – 3, 4)
3. **भारत में** राजस्थान **उत्तर - पश्चिम** में स्थित है। देखिए मानचित्र -4 (भारत)]

अब तक हमने देखा कि राजस्थान शब्द का उद्भव कैसे हुआ? तथा हम ने समझा कि पृथ्वी पर राजस्थान की स्थिति कहां पर है ? अब हम अपने अगले बिंदु "राजस्थान का विस्तार" के बारे में पढ़ते हैं -

राजस्थान का विस्तार :- इसका अध्ययन करने से पहले इससे जुड़े हुए कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को समझिए-

1. भूमध्य रेखा (विषुवत रेखा)
2. कर्क रेखा
3. मकर रेखा
4. अक्षांश
5. देशांतर

इन मानचित्र को ध्यान से समझिए-

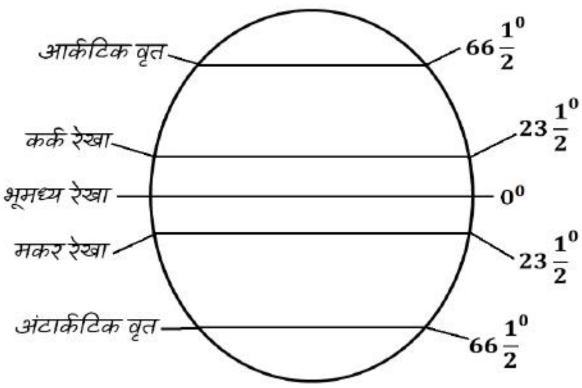

मानचित्र – 1

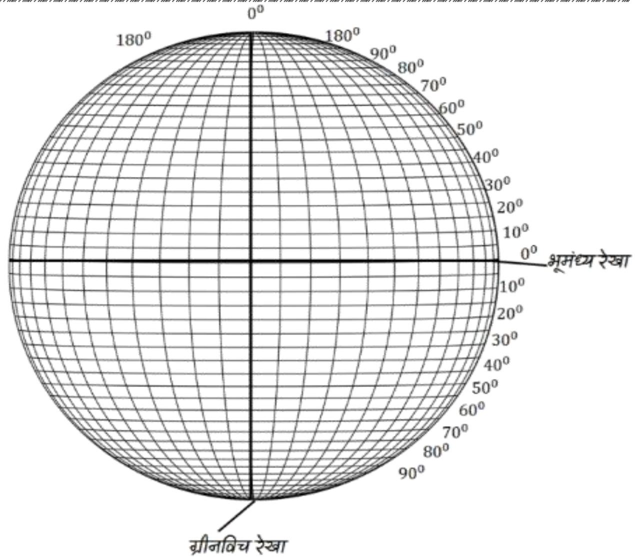

मानचित्र – 2

नोट - भूमध्य रेखा :- "विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा" पृथ्वी की सतह पर उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव से समान दूरी पर स्थित एक काल्पनिक रेखा है। यह पृथ्वी को दो गोलार्द्धों, उत्तरी व दक्षिणी में विभाजित करती है।

इस रेखा पर प्राय: वर्ष भर दिन और रात की अवधि बराबर होती, यही कारण है कि इसे **विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा** कहा जाता है।

विषुवत रेखा के उत्तर में कर्क रेखा है व दक्षिण में मकर रेखा है।

नोट- पृथ्वी या ग्लोब को दो काल्पनिक रेखाओं द्वारा "उत्तर - दक्षिण तथा पूर्व - पश्चिम" में विभाजित किया गया है। इन्हें अक्षांश व देशांतर रेखाओं के नाम से जानते है।

अक्षांश रेखाएँ - वह रेखाएं जो ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर बनी हुई है, अर्थात् भूमध्य रेखा से किसी भी स्थान की उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की ओर की कोणीय दूरी को अक्षांश रेखा कहते है। **भूमध्य रेखा को अक्षांश रेखा** माना गया है। **(देखें मानचित्र -1)**

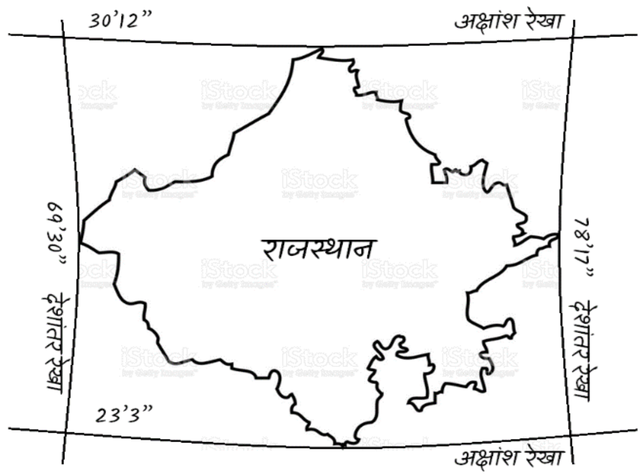

<u>रेडक्लिफ रेखा पर भारत के तीन राज्य व दो केंद्र शासित प्रदेश स्थित हैं।</u>

1. जम्मू-कश्मीर (1216 कि.मी. लद्दाख को मिलाकर)
2. लद्दाख
3. पंजाब (547 कि.मी.)
4. राजस्थान (1070 कि.मी.)
5. गुजरात (512 कि.मी.)

- रेडक्लिफ रेखा के साथ **राजस्थान की सर्वाधिक सीमा - (1070 कि.मी.)**
- रेडक्लिफ रेखा के साथ **सबसे कम सीमा- गुजरात (512 कि.मी.)**
- रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक नजदीक राजधानी मुख्यालय - श्रीनगर
- रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक दूर राजधानी मुख्यालय - जयपुर
- रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में बड़ा राज्य - राजस्थान
- रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में सबसे छोटा राज्य - पंजाब
- रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की कुल सीमा **1070 कि.मी.** है। जो **राजस्थान के पांच जिलों** से लगती है।

1. श्रीगंगानगर-210 कि.मी.
2. बीकानेर-168 कि.मी.
3. फलौदी
4. जैसलमेर- 464 कि.मी.
5. बाड़मेर- 228 कि.मी.

रेडक्लिफ पर सर्वाधिक सीमा जैसलमेर तथा न्यूनतम सीमा रेखा फलौदी बनाता है ।

41 जिले बनाने से पहले सबसे कम सीमा बीकानेर की लगती थी ।

- रेडक्लिफ रेखा राज्य में उत्तर में श्रीगंगानगर के **हिन्दूमल कोट** से लेकर दक्षिण - पश्चिम में बाड़मेर के ब्राह्मणों की ढाणी, बाखासर गाँव, सेडवा तहसील तक विस्तृत है।
- रेडक्लिफ रेखा पर पाकिस्तान के 9 जिले पंजाब प्रान्त का बहावलपुर, बहावल नगर व रहीमयारखान तथा सिंध प्रान्त

के घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपारकर राजस्थान से सीमा बनाती हैं।

राजस्थान के साथ सर्वाधिक सीमा – बहावलपुर

राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा- खैरपुर

राजस्थान के साथ सीमा पर पाकिस्तान का सबसे बड़ा जिला बहावलपुर है।

राजस्थान के साथ सीमा पर पाकिस्तान का सबसे छोटा जिला सुकुर है।

पाकिस्तान के दो प्रांत राजस्थान की सीमा को छूते हैं।

1. पंजाब प्रांत
2. सिंध प्रांत

- रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।
- राजस्थान की रेडक्लिफ रेखा से सर्वाधिक सीमा जैसलमेर (464 कि.मी.) व न्यूनतम सीमा फलौदी की लगती है।
- रेडक्लिफ के नजदीक जिला मुख्यालय – श्री गंगानगर
- रेडक्लिफ के सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय - बीकानेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे बड़ा जिला - जैसलमेर

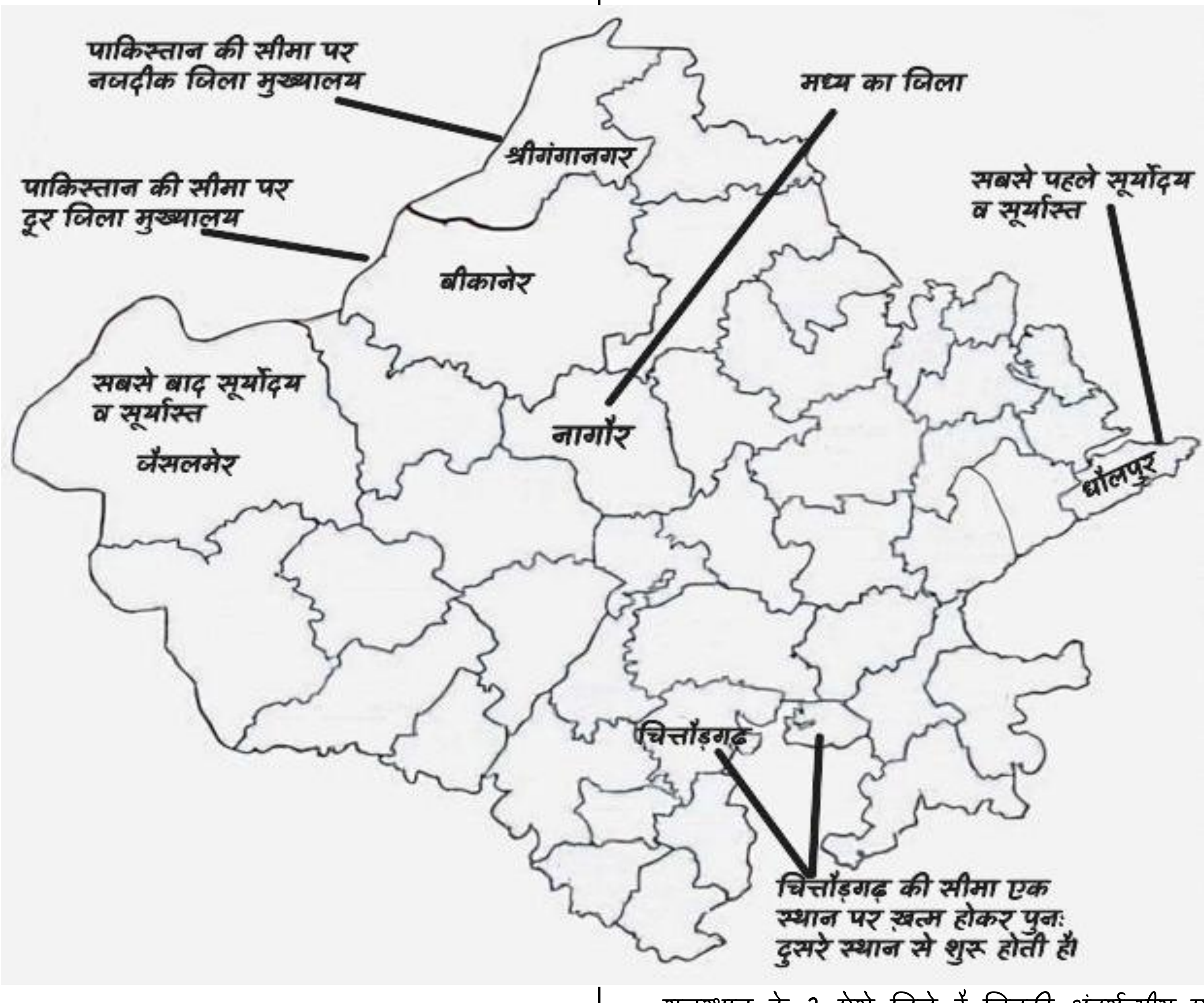

- राजस्थान के अंतर्राष्ट्रीय सीमा वाले जिले - 5 (श्री गंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर, फलौदी, बाड़मेर)
- राजस्थान के केवल अंतर्राष्ट्रीय सीमा वाले जिले - 3 (बीकानेर, जैसलमेर, फलौदी)

राजस्थान के 13 जिलें ऐसे जिलें हैं जो न तो अंतरराज्यीय सीमा बनाते हैं तथा न ही अंतरराष्ट्रीय ।

झालावाड मध्यप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा (520 कि.मी) बनाता है तथा बाड़मेर गुजरात के साथ न्यूनतम 14 कि.मी. की सीमा बनाता है।

राजस्थान के 2 ऐसे जिले है जिनकी अंतर्राज्यीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सीमा है –

1. श्रीगंगानगर (पाकिस्तान + पंजाब)
2. बाड़मेर (पाकिस्तान + गुजरात)

राजस्थान के 4 जिले ऐसे है जिनकी सीमा दो – दो राज्यों से लगती है-

हनुमानगढ़ :- पंजाब + हरियाणा

धौलपुर :- उत्तरप्रदेश + मध्यप्रदेश

बाँसवाड़ा :- मध्यप्रेदश + गुजरात

डीग :- उत्तरप्रदेश + हरियाणा

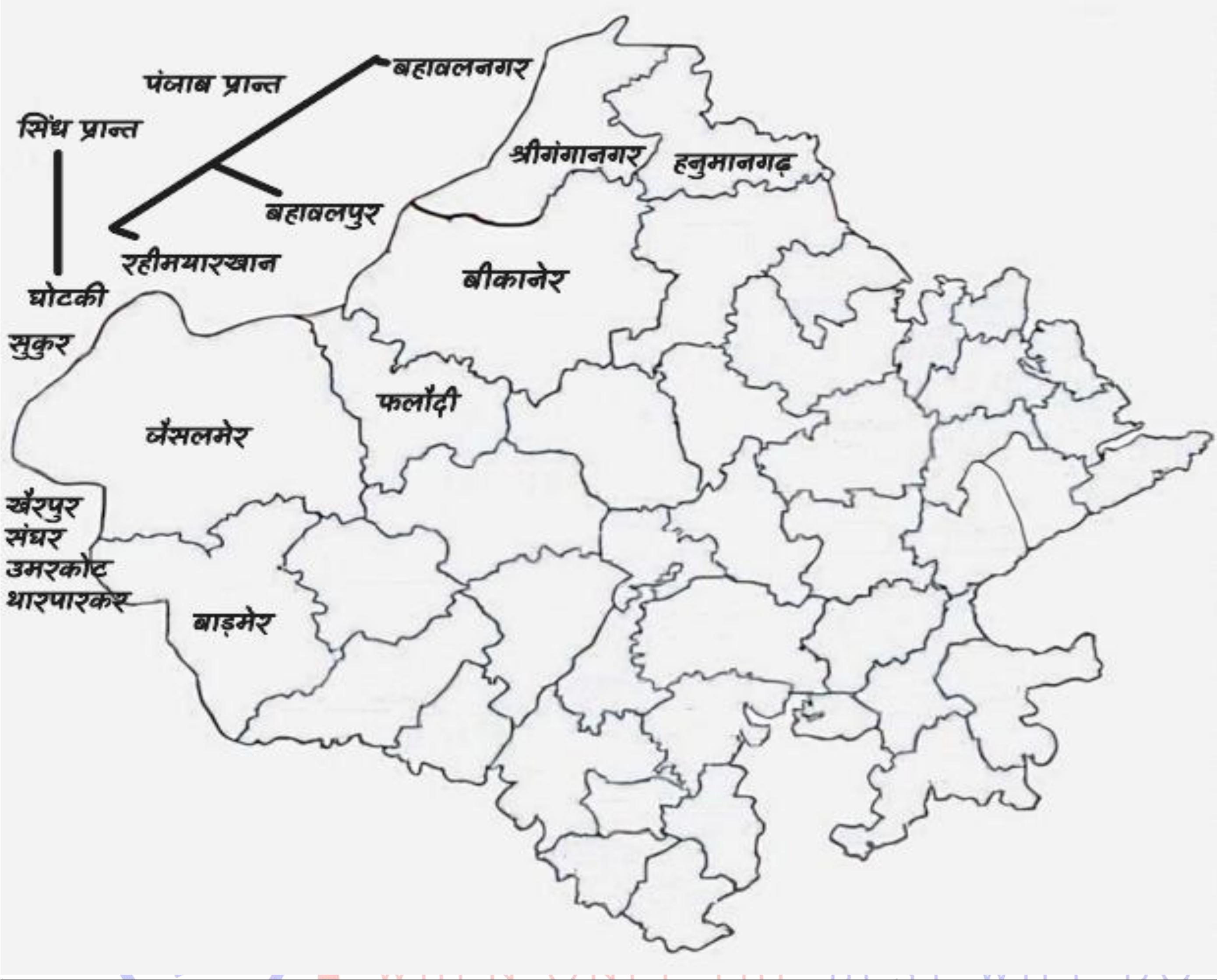

❖ **महत्त्वपूर्ण प्रश्न**

1. राजस्थान का प्रवेश द्वार किसे कहा जाता है - भरतपुर
2. महुआ के पेड़ पाये जाते है – उदयपुर व चित्तौड़गढ़
3. राजस्थान में छप्पनिया अकाल किस वर्ष पड़ा - 1956 वि.सं.
4. राजस्थान में मानसून वर्षा किस दिशा में बढ़ती है – दक्षिण - पश्चिम से उत्तर - पूर्व में

   नोट :- लेकिन राजस्थान में उत्तर – पश्चिम से दक्षिण - पूर्व की ओर वर्षा की मात्र में वृद्धि होती है।
5. राजस्थान में गुरु शिखर चोटी की ऊँचाई कितनी है -1722 मीटर
6. राजस्थान में किस शहर को सन सिटी के नाम से जाना जाता है – जोधपुर को
7. राजस्थान की आकृति है – विषम कोण चतुर्भुज
8. राजस्थान के किस जिले का क्षेत्रफल सबसे ज्यादा है - जैसलमेर
9. राज्य की कुल स्थलीय सीमा की लम्बाई है - 5920 किमी
10. राजस्थान का सबसे पूर्वी जिला है - धौलपुर
11. राजस्थान का सागवान कौन सा वृक्ष कहलाता है – रोहिड़ा
12. राजस्थान के किस क्षेत्र में सागौन के वन पाए जाते है - दक्षिणी
13. जून माह में सूर्य किस जिले में लम्बत् चमकता है - बाँसवाड़ा
14. राजस्थान में पूर्ण मरुस्थल वाले जिलें हैं- जैसलमेर, बाड़मेर
15. राजस्थान के कौन से भाग में सर्वाधिक वर्षा होती है – दक्षिणी - पूर्वी
16. राजस्थान में सर्वाधिक तहसीलों की संख्या किस जिले में है - जयपुर
17. राजस्थान में सर्वप्रथम सूर्योदय किस जिले में होता है - धौलपुर
18. उड़िया पठार किस जिले में स्थित है - सिरोही
19. राजस्थान में किन वनों का अभाव है – शंकुधारी वन
20. राजस्थान के क्षेत्रफल का कितना भू-भाग रेगिस्तानी है – लगभग दो-तिहाई
21. राजस्थान के पश्चिम भाग में पाए जाने वाला सर्वाधिक विषैला सर्प – पीवणा सर्प
22. राजस्थान के पूर्णतया: वनस्पति रहित क्षेत्र - समगाँव (जैसलमेर)
23. राजस्थान के किस जिले में सूर्य किरणों का तिरछापन सर्वाधिक होता है -श्रीगंगानगर

अध्याय – 3

अपवाह तंत्र

अपवाह तंत्र -

- जब नदी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल का प्रवाह करती हैं, तो उसे अपवाह तंत्र कहते हैं।
- अपवाह तंत्र में नदियाँ एवं उसकी सहायक नदियाँ शामिल होती हैं।
- जैसे गंगा और उसकी सहायक नदियाँ मिल कर एक अपवाह तंत्र बनाती हैं उसी प्रकार सिंधु और उसकी सहायक नदियाँ (झेलम, रावी, व्यास, चिनाब) मिलकर एक अपवाह तंत्र बनाती हैं।
- इसी तरह ब्रह्मपुत्र नदी और उसकी सहायक नदियाँ भी अपवाह तंत्र बनाती हैं।
- भारत की सबसे लंबी नदी गंगा है तथा सबसे बड़ा अपवाह तंत्र वाली नदी ब्रह्मपुत्र है।

अब हम अध्ययन करेंगे राजस्थान के अपवाह तंत्र के बारे में।

- राजस्थान में कई नदियाँ हैं जैसे लूनी, माही, बनास, चंबल। इसके अलावा यहाँ पर स्थित कई झीलें भी इस अपवाह तंत्र में शामिल होती हैं।
- प्रिय छात्रों जैसा कि आपको मालूम है राजस्थान में **अरावली पर्वतमाला** स्थित है, यह राजस्थान के लगभग बीच में स्थित है इसलिए यह **राज्य की नदियों का स्पष्ट रूप से दो भागों** में विभाजित करती है।
- **इसके पूर्व में बहने वाली नदियाँ अपना जल बंगाल की खाड़ी में** तथा इसके **पश्चिम में बहने वाली नदियाँ अपना जल अरब सागर** में लेकर जाती है।
- राजस्थान के अपवाह तंत्र को हम दो भागों में विभक्त करेंगे फिर उनके अन्य क्रमशः 4 एवं 3 उप भाग होंगे -

1. क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण
2. अपवाह के आधार पर वर्गीकरण

1. क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण :- को चार भागों में बाँटा गया है -

(अ) उत्तरी व पश्चिमी राजस्थान- इस तंत्र में लूनी, जवाई, सूकड़ी, बांडी ,सागी जोजड़ी घग्घर, कातली नदियाँ शामिल होती हैं।

(ब) दक्षिण व पश्चिमी राजस्थान - इसमें पश्चिमी बनास, साबरमती, वाकल, व सेई नदियाँ शामिल होती है

(स) दक्षिणी राजस्थान - इसमें माही, सोम, जाखम, अनास मोरेन नदियाँ शामिल होती हैं।

(द) दक्षिण - पूर्वी राजस्थान - इसमें चंबल, कुनु, पार्वती, कालीसिंध, कुराल, आहू, नेवज, परवन, मेज, गंभीरी, छोटी कालीसिंध, ढीला, खारी, माशी, कालीसिल, मोरेल, डाई, सोहादरा आदि नदियाँ शामिल होती हैं।

2. अपवाह के आधार पर वर्गीकरण - प्रिय छात्रों नदियों के विभाजन का सबसे अच्छा तरीका है और इसी आधार पर नदियों को तीन भागों में बाँटा गया है।

(अ) बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ

इस अपवाह तंत्र में प्रमुख नदियाँ शामिल होती है। जैसे **चंबल, बनास, कालीसिंध, पार्वती, बाणगंगा, खारी, बेड़च, गंभीरी, मेनाल, कोठारी, आहू, कालीसिंध तथा परवन आदि।** ये नदियाँ अरावली के पूर्व में बहती हैं इनमें कुछ नदियों का उद्गम स्थल अरावली का पूर्वी घाट तथा कुछ का मध्यप्रदेश का विंध्याचल पर्वत है। यह सभी नदियाँ अपना जल यमुना नदी के माध्यम से बंगाल की खाड़ी में ले जाती हैं।

(ब) अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ -

इस अपवाह तंत्र में शामिल प्रमुख नदियाँ है। जैसे **माही, सोम, जाखम, साबरमती, पश्चिमी बनास, लूणी, जोजड़ी, बांडी, सूकड़ी इत्यादि। पश्चिमी बनास, लूनी गुजरात के कच्छ के रण में विलुप्त हो जाती हैं,** ये सभी नदियाँ अरब सागर की ओर अपना जल लेकर जाती हैं।

(स) अंतः प्रवाह वाली नदियाँ -

बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ और अरब सागर में गिरने वाली नदियों के अलावा कुछ छोटी नदियाँ भी हैं जो कुछ दूरी तक प्रभावी होकर राज्य में अपने क्षेत्र में विलुप्त हो जाती हैं तथा उनका जल समुद्र तक नहीं जा पाता है, इसलिए इन्हें आंतरिक प्रवाह वाली नदियाँ कहा जाता है, जैसे :- **काकनी, कांतली, साबी, घग्घर, मेंथा, बांडी, रूपनगढ़ इत्यादि।**

राजस्थान राज्य की नदियों से संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्य जो की परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है -

राजस्थान की अधिकांश नदियों का प्रवाह क्षेत्र अरावली पर्वत की पूर्व में है।

- **राजस्थान में चंबल तथा माही के अलावा अन्य कोई नदी बारह मासी नहीं है।**
- **राज्य में चूरू, बीकानेर व फलौदी तीन ऐसे जिले हैं जहाँ कोई नदी नहीं है।**
- श्रीगंगानगर में पृथक् से कोई नदी नहीं है लेकिन वर्षा होने पर घग्घर नदी का बाढ़ का पानी सूरतगढ़, अनूपगढ़ तक चला जाता है।
- राज्य के 60% भू-भाग पर आंतरिक जल प्रवाह का विस्तार है।
- राज्य में सबसे अधिक सतही जल चंबल नदी में उपलब्ध है।
- **राज्य में बनास नदी का जल ग्रहण क्षेत्र सबसे बड़ा है।**
- **राज्य में सर्वाधिक नदियाँ कोटा संभाग में** बहती हैं।
- **राज्य की सबसे बड़ी नदी चंबल है।**
- पश्चिमी राजस्थान की जीवन रेखा इंदिरा गांधी नहर परियोजना को कहते हैं।

- मारवाड़ की जीवन रेखा लूनी नदी को कहते हैं ।
- बीकानेर की जीवन रेखा कंवर सेन लिफ्ट परियोजना को कहते हैं ।
- राजसमंद की जीवन रेखा नंद समंद झील कहलाती है ।
- भरतपुर की जीवन रेखा मोती झील है ।
- गुजरात की जीवन रेखा नर्मदा परियोजना है ।
- जमशेदपुर की जीवन रेखा स्वर्ण रेखा नदी को कहा जाता है। इस नदी पर हुंडरू जल प्रपात स्थित है ।
- आदिवासियों की या दक्षिणी राजस्थान की जीवन रेखा माही नदी को कहा जाता है ।
- पूरे राज्य में बहने वाली सबसे बड़ी नदी बनास है।
- भारत सरकार द्वारा राजस्थान भूमिगत जल बोर्ड की स्थापना 1955 में की गई थी । इस बोर्ड का नियंत्रण राजस्थान सरकार को सौंपा गया था। 1971 से इस बोर्ड को भूजल विभाग के नाम से जाना जाता है इसका कार्यालय जोधपुर में है ।
- पूर्णत : राजस्थान में बहने वाली सबसे लंबी नदी तथा सर्वाधिक जल ग्रहण क्षेत्र वाली नदी बनास है।
- चंबल नदी पर भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) के निकट चूलिया जल प्रपात तथा मांगली नदी पर बूंदी में "भीमलत प्रपात" है।
- **अंतर्राज्य सीमा बनाने वाली एक मात्र नदी है चंबल,** जो कि राजस्थान व मध्यप्रदेश की सीमा बनाती है।
- टोंक जिले की राजमहल नामक जगह पर बनास नदी, डाई नदी तथा खारी नदी के द्वारा त्रिवेणी संगम बनाया जाता है। यहाँ शिव एवं सूर्य की संयुक्त प्रतिमा स्थित है, जो मार्तंड भैरव मंदिर या देवनारायण मंदिर के नाम से जाना जाता है यहाँ नारायण सागर बाँध स्थित है।

प्रिय छात्रों अब हम प्रत्येक अपवाह तंत्र को विस्तृत रूप से समझते हैं । सबसे पहले हम बंगाल की खाड़ी की ओर चले जाने वाली नदियों का अध्ययन करेंगे -

1. **<u>चंबल नदी –</u>**प्रिय छात्रों चंबल नदी के बारे में हम समझते हैं कि क्या है इसकी महत्त्वपूर्ण विशेषताएं –

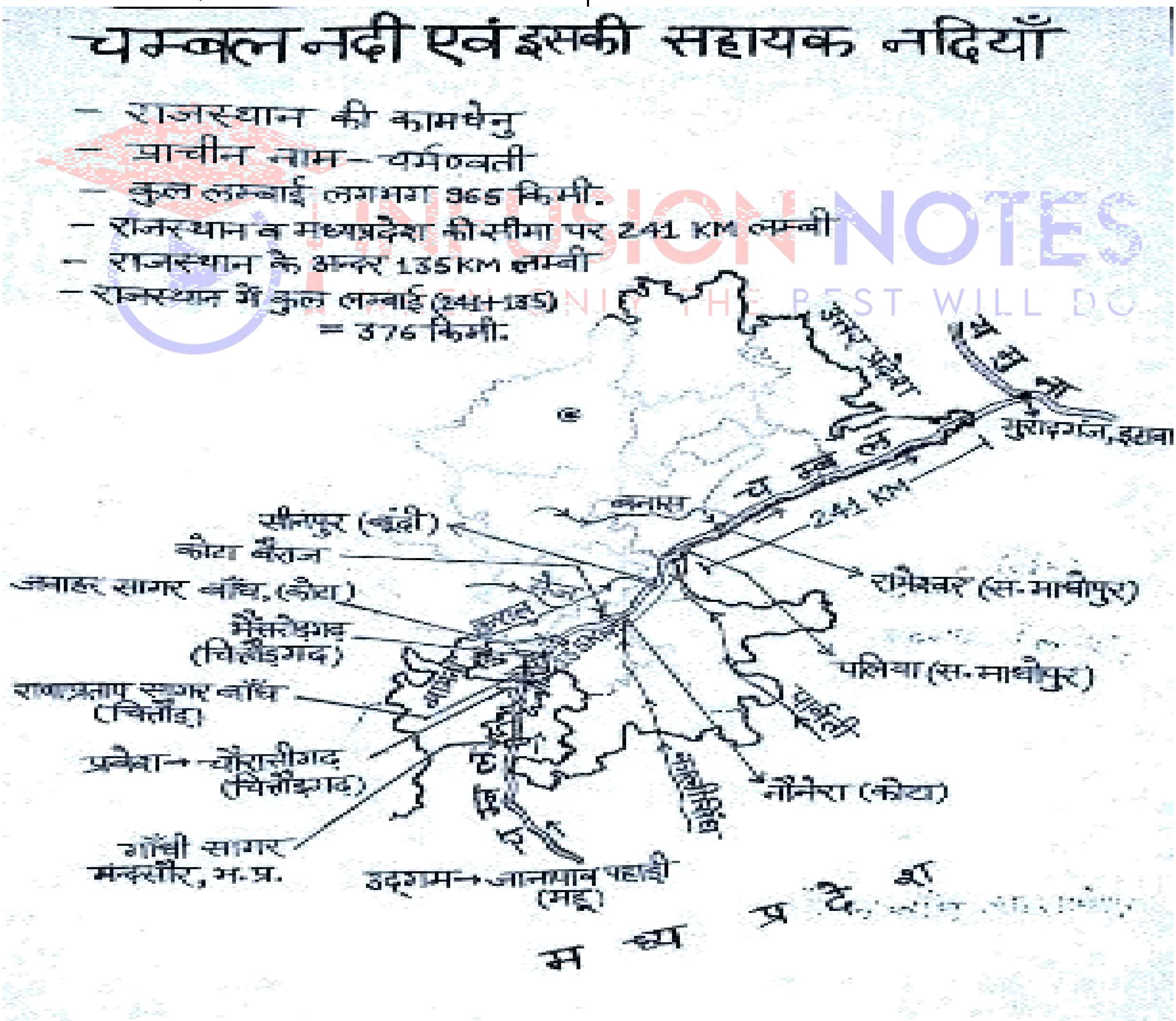

- ***बनास नदी पर झाड़ोल सिंचाई परियोजना स्थित है।***
- *बनास नदी अपने प्रवाह के अंत में सवाई माधोपुर जिले के खंडार तहसील के रामेश्वर नामक स्थान पर जाकर चंबल में मिल जाती है अर्थात् बनास चंबल की सहायक नदी है जैसा कि हमनें पहले ही पढ़ा था।*
- *बनास नदी चंबल की सबसे बड़ी सहायक नदी है इस नदी पर नाथद्वारा के पास नंदसमंद बाँध का निर्माण कराया गया है जिसको राजसमंद की लाइफ लाइन भी कहा जाता हैं ।*
- ***इसकी सहायक नदियाँ बेड़च, कोठारी, खारी, मानसी, मोरेल, गंभीरी, मेनाल, सहोदरा आदि हैं।***

बनास नदी की मुख्य सहायक नदियों के नाम है ।

"बेड़च सोम खारी का मोर मांग"

सूत्र	-	***नदियाँ***
बेड़च	-	*बेड़च*
म	-	*मेनाल*
सो	-	*सहोदरा*
खारी	-	*खारी*
का	-	*कोठारी*
मोर	-	*मोरेल*
मा	-	*मानसी*
ग	-	*गम्भीरी*

3. बेड़च नदी -

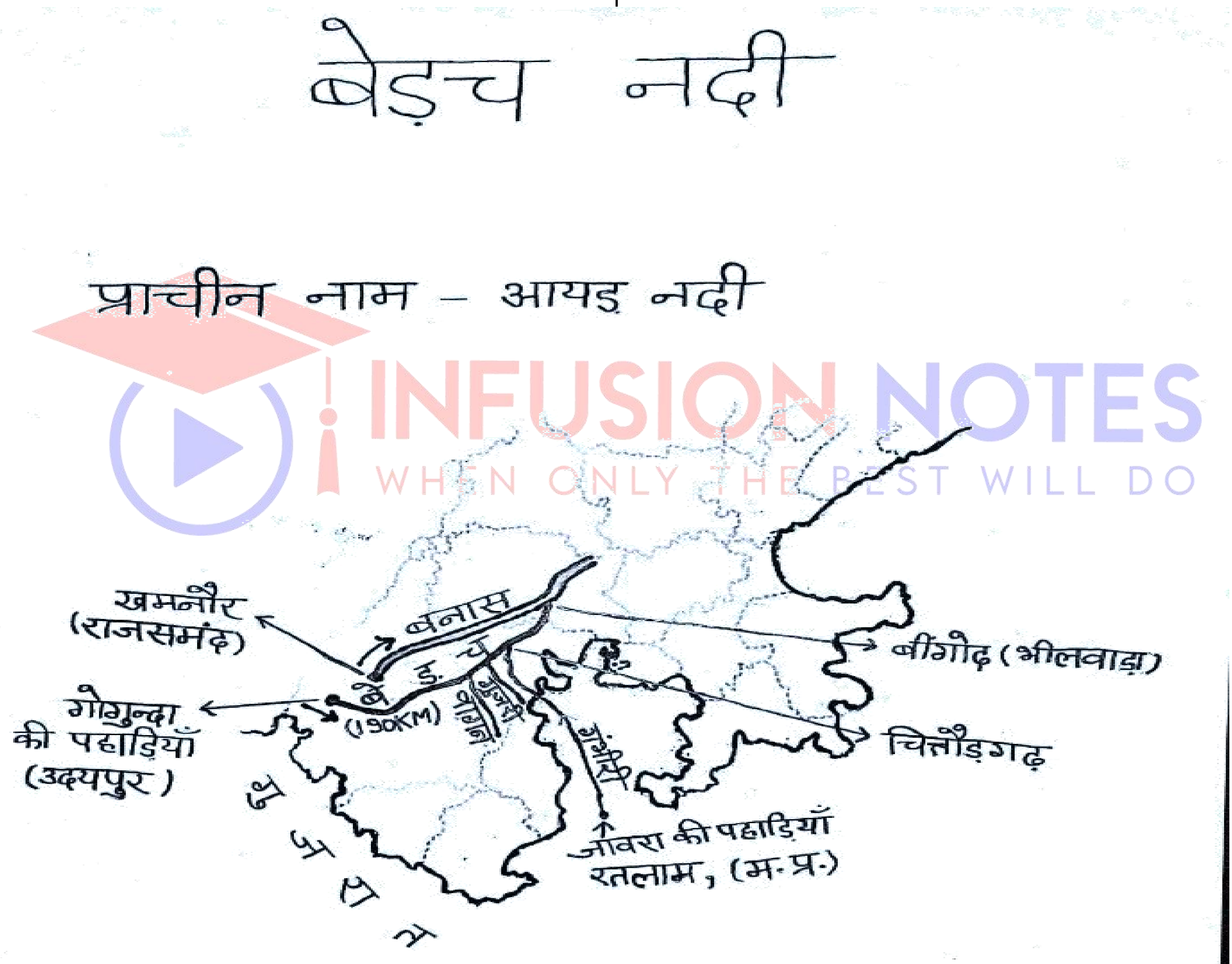

- *प्रारंभ में इस नदी को **आयड़ नदी** के नाम से जानते है तथा उदय सागर झील के उपरांत इसे बेड़च नदी के नाम से जानते हैं ।*
- *इस नदी का उद्गम स्थल उदयपुर जिले में स्थित गोगुंदा की पहाड़ियों से होता है उदयपुर में 13 किलो मीटर बहने के बाद यह नदी उदयसागर झील में गिरती है । उदयपुर, चित्तौड़गढ़ में बहती हुई यह नदी भीलवाड़ा में बीगोद कस्बे के निकट बनास नदी में मिल जाती है । वहीं मेनाल नदी बीच में मिलती है इनके संगम स्थल को त्रिवेणी संगम कहते हैं।*
- *उदयपुर जिले में स्थित प्रसिद्ध आहड़ सभ्यता इसी नदी के तट पर स्थित थी । बेड़च नदी की कुल लंबाई लगभग 180 किलो मीटर है ।*
- ***इस नदी की सहायक नदियाँ -** गंभीरी, गुजरी, वागन हैं।*

4. गंभीरी नदी -

- ***यह मध्यप्रदेश राज्य के रतलाम जिले के जावरा की पहाड़ियों से निकलती है।*** *यह नदी चित्तौड़गढ़ जिले में बेड़च में जाकर विलीन हो जाती है। इसे चित्तौड़गढ़ की गंगा भी कहा जाता है।*

5. खारी नदी -

- *इस नदी का* ***उद्गम स्थल राजसमंद जिले में स्थित बिजराल ग्राम की पहाड़ियों से*** *होता है ।*
- *यह नदी अजमेर तथा उदयपुर की सीमा निर्धारित करती है*
- *यहाँ ओझियाणा की सभ्यता विकसित हुई थी आगे चल कर यह नदी टोंक जिले के राजमहल नामक स्थान पर* ***बनास में जाकर मिल जाती है।***

6. कोठारी नदी -

- *इस नदी का* ***उद्गम राजसमंद जिले के दिवेर नामक स्थान से*** *होता है तथा भीलवाड़ा जिले में बनास नदी में जाकर मिल जाती है ।*
- *इस नदी पर* ***मेजा बाँध*** *बनाया गया है जो भीलवाड़ा जिले को पेयजल उपलब्ध करवाता है ।*
- *भीलवाड़ा जिले की प्रसिद्ध बागोर सभ्यता कोठारी नदी के तट पर विकसित हुई।*
- ***अपवाह क्षेत्र –*** *राजसमन्द, भीलवाड़ा, ब्यावर, राजमहल (टोंक)*

7. माशी नदी -

- *इस नदी का* ***उद्गम अजमेर (किशनगढ़) जिले*** *से होता है यह नदी टोंक जिले में बीसलपुर के समीप बनास नदी में विलीन हो जाती है।*

8. डाई नदी -

इस नदी का ***उद्गम अजमेर जिले के किशनगढ़ (नसीराबाद) के मध्य स्थित पहाड़ियों*** *से होता है यह नदी टोंक जिले में राजमहल कस्बे के समीप बनास में जाकर मिल जाती है यह भी बनास की एक सहायक नदी है।*

9. मानसी नदी -

इस नदी का ***उद्गम भीलवाड़ा जिले में करणगढ़ की पहाड़ियों से*** *होता है यह नदी भीलवाड़ा जिले में बनास में जाकर मिल जाती है।*

10. बांडी नदी -

इस नदी का उद्गम जयपुर जिले में स्थित सामोद की पहाड़ियों से होता है यह नदी माशी नदी में विलीन हो जाती है।

11. ढूंढ नदी -

इस नदी का ***उद्गम जयपुर जिले में स्थित अचरोल की पहाड़ियों से*** *होता है यह नदी जयपुर तथा दौसा जिले में बहती हुई दौसा जिले के लालसोट तहसील के समीप मोरेल नदी में मिल जाती है।*

12. बाणगंगा नदी –

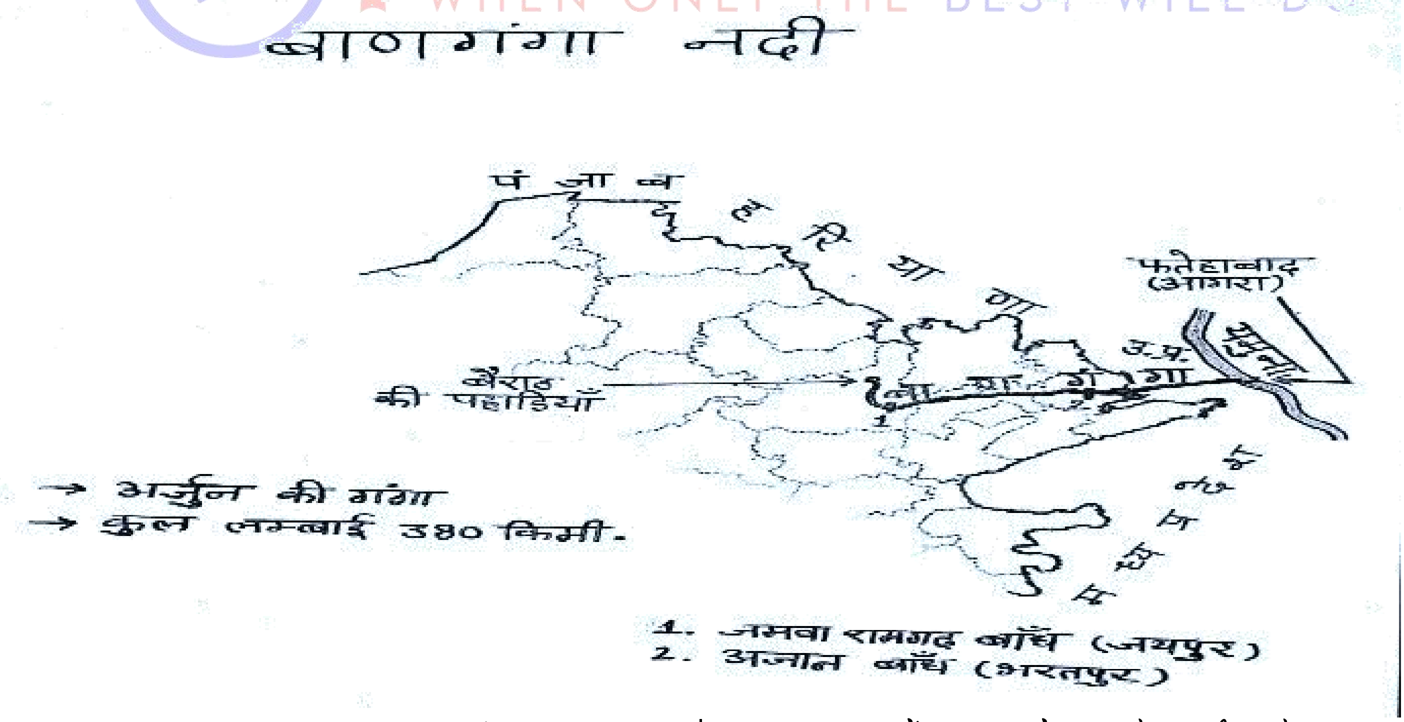

इसका ***उद्गम कोटपूतली-बहरोड़ जिले की बैराठ पहाड़ियों से होता है। इसे अर्जुन की गंगा / ताला नदी व रुन्डित नदी भी कहा जाता है।***

- *इस नदी की कुल लंबाई लगभग 240 किलोमीटर है ।*
- ***राजस्थान में अपवाह क्षेत्र –*** *कोटपूतली-बहरोड़, जयपुर, दौसा, भरतपुर, फतेहाबाद ।*
- *इस नदी पर जयपुर में* ***जमवारामगढ़ बाँध*** *बना हुआ है।*
- ***भरतपुर में इस नदी पर अजान बाँध*** *बना हुआ है। जिससे घना पक्षी अभ्यारण को जलापूर्ति की जा रही है।*

अध्याय – 2

कक्षा में अध्यापकों की भूमिका

- प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री एडम्स कहते हैं कि शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है, शिक्षा द्विमुखी रूपी प्रक्रिया की दो धुरियाँ हैं, एक है 'शिक्षक' तथा दूसरी है 'शिक्षार्थी'। अतः शिक्षक को बालक की प्रवृत्तियों, रुचियों, क्षमताओं, योग्यताओं और आवश्यकताओं का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।
- किसी भी विषय के शिक्षण की सफलता अध्यापक पर ही निर्भर करती है। विद्यालयी कक्षाओं में बालकों के लिए अध्यापक ही प्रेरणा और ज्ञान का सहज एवं सुलभ स्रोत हैं। एक शिक्षक को अपने दायित्वों का भलीभांति निर्वाह करने तथा शिक्षण में सफलता करते हुए निम्न विशेषताओं का होना आवश्यक है –

विषय का पूर्ण ज्ञान - शिक्षक को अपने विषय का नवीनतम पूर्ण ज्ञान होना चाहिए ताकि वह आत्मविश्वास के साथ प्रभावी अध्यापन करवा सके। प्रतिभावान एवं सृजनात्मक विद्यार्थियों की शंकाओं व कठिनाइयों का निवारण सहजता व स्पष्टता से कर सके तथा ऐसे अधिगमकर्ताओं की गहन अध्ययन के लिए सन्दर्भित पुस्तकों / साहित्य का स्वाध्यायकरने हेतु मार्ग - निर्देशित एवं अभिप्रेरित करने में सक्षम हो।

प्रभावशाली व्यक्तित्व - अध्यापक का व्यक्तित्व प्रभावशाली हो। वह शारीरिक तथा मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हो। उसके आचार - विचार, रहन - सहन, खान- पान एक आदर्श ही होना चाहिए। ऐसा अध्यापक ही बालकों पर प्रभाव डाल सकता है और उनका सर्वांगीण विकास कर सकता है।

सहनशीलता - शिक्षक को छात्रों को कोई तथ्य, सिद्धांत या सूझ समझाते समय बहुत ही धैर्यपूर्वक काम लेना चाहिए। शिक्षक में ज्ञान संचय की इच्छा होनी चाहिए। अध्यापक को कभी भी अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए तथा बच्चों को मनोवैज्ञानिक रूप से समझाकर उन्हें ठीक रास्ते पर ले आना चाहिए।

अध्यापन कार्य में रुचि - शिक्षक को स्वयं में हीनता और उदासीनता की भावना को कभी भी उत्पन्न नहीं देना चाहिए तथा अध्यापन कार्य एवं गहन अध्ययन में रुचि लेनी चाहिए। उसे अधिगम के विभिन्न सिद्धांतों का ज्ञान होना चाहिए।

आत्मविश्वास - अध्यापक द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली प्रत्येक क्रिया में आत्मविश्वास झलकना चाहिए। आत्मविश्वास से शिक्षक अध्यापन कार्य में स्वाभाविक ढंग से समर्थ हो सकता है। आत्मविश्वास के अभाव में विषय में माहिर होने के बावजूद भी शिक्षक उसे सफलतापूर्वक नहीं पढ़ा सकता।

परिश्रमी तथा कर्तव्यपरायण - अध्यापक को अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक होना भी आवश्यक है। विद्यार्थियों को उचित रूप से शिक्षा में यथाशक्ति उसे कमी नहीं छोड़नी चाहिए। उसे गम्भीरतापूर्वक अपना पाठ भलीभांति सोच समझकर तैयार करके ही पढ़ाना चाहिए तथा शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हर सम्भव प्रयास करने चाहिए।

नवीनतम विधि - प्रविधियों का ज्ञान - इस वैज्ञानिक युग में शिक्षक को नवीनतम विधि - प्रविधियों का प्रयोग करना चाहिए तथा आधुनिकतम शैक्षिक दृश्य - श्रव्य शिक्षण - अधिगम सामग्री प्रयुक्त करनी चाहिए। साथ ही बाल - मनोविज्ञान का ज्ञान भी शिक्षक के लिए आवश्यक है।

सहायक सामग्री का प्रयोग एवं स्वयं निर्माण की कुशलता - उचित शिक्षण के लिए आवश्यक है कि अध्यापक उपयोगी सहायक साधनों का आवश्यकतानुसार उचित प्रयोग करना जानता हो। शिक्षण संबंधी सभी प्रकार की दृश्य - श्रव्य सामग्री को प्राप्त करने, प्रयोग करने एवं उससे पूर्ण शिक्षण के लाभ उठाने में अध्यापक पूरी तरह से योग्य होना चाहिए। साथ ही इस प्रकार की सहायक सामग्री का तथा अन्य साज - सामान एवं उपकरणों को कम खर्चे में कैसे स्वयं निर्मित किया जा सकता है, इसकी भी उसे व्यवहारिक जानकारी होनी चाहिए।

शैक्षिक नवचारों का ज्ञान - शिक्षक को शैक्षिक नवचारों का ज्ञान होना चाहिए। शिक्षा जगत में होने वाले दिन - प्रतिदिन नए अविष्कारों एवं शोधों के बारे में जानकारी होने से शिक्षक प्रभावी शिक्षण करा सकता है और शिक्षण के स्वरूप को नया रूप प्रदान किया जा सकता है।

नवीन मूल्यांकन विधियों का ज्ञान - शिक्षक को नए प्रकार की मूल्यांकन प्रविधियों का ज्ञान होना आवश्यक है। उसे बुद्धि - परीक्षण, अभिरुचि - परीक्षण, नैदानिक-परीक्षाओं आदि विषय में भी जानकारी रखनी चाहिए।

विषय के प्रति व्यवहारिक दृष्टिकोण एवं व्यावसायिक निष्ठा - शिक्षक को अपने विषय के प्रति सही एवं रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए तथा अध्यापन के प्रति एक व्यवसाय की भांति आशावादिता, पूर्ण निष्ठा एवं प्रेम रखना चाहिए। उसमें उत्तरदायित्व निभाने, उद्देश्य में प्रति ईमानदार तथा कर्तव्य भावना होनी चाहिए। व्यावसायिक निष्ठा शिक्षण की प्रगति की आधारशिला होती है।

निष्पक्ष दृष्टिकोण - अध्यापक को सभी बालकों के प्रति पक्षपात और द्वेष भावना से रहित समान व्यवहार करना चाहिए। किसी भी छात्र के लिए पूर्व धारण बनाए बिना सभी को प्रयोग आदि करने का, प्रदर्शन में भाग लेने का तथा अन्य कई तरह से सभी का समान रूप से पूरा - पूरा ध्यान रखने का प्रयत्न करना चाहिए।

अभिव्यक्त करने की शक्ति - अध्यक्ष में यह सामर्थ्य होनी चाहिए कि वह विद्यार्थियों से जो भी कहना या समझना चाहता है, उसे विद्यार्थियों तक पहुँचा सके। उसके विचार सुलझे हुए होने चाहिए तथा आवाज स्पष्ट, मधुर एवं अच्छी तरह सुनी जाने वाली होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त उसे श्याम - पट्ट पर की जाने वाली लिखाई, खींचे जाने वाले

Dear Aspirants, here are the our results in differents exams (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk8S6W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vl

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

whatsapp https://wa.link/f64bo7 2 web.- https://rb.gy/86fb4c

Our Selected Students

Approx. 563+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
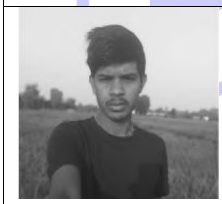	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

whatsapp https://wa.link/f64bo7 3 web.- https://rb.gy/86fb4c

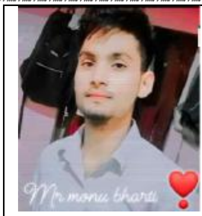	**MONU S/O KAMTA PRASAD**	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
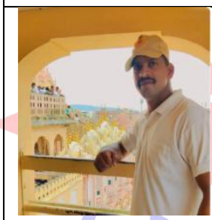	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379 Admit Card HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION	Jind (Haryana)

And many others……

Click on the below link to purchase notes

WhatsApp करें – https://wa.link/f64bo7

Online Order करें – https://rb.gy/86fb4c

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE